अक्तूबर (प्रथम) 2021 | ₹35.00

चंपक

J

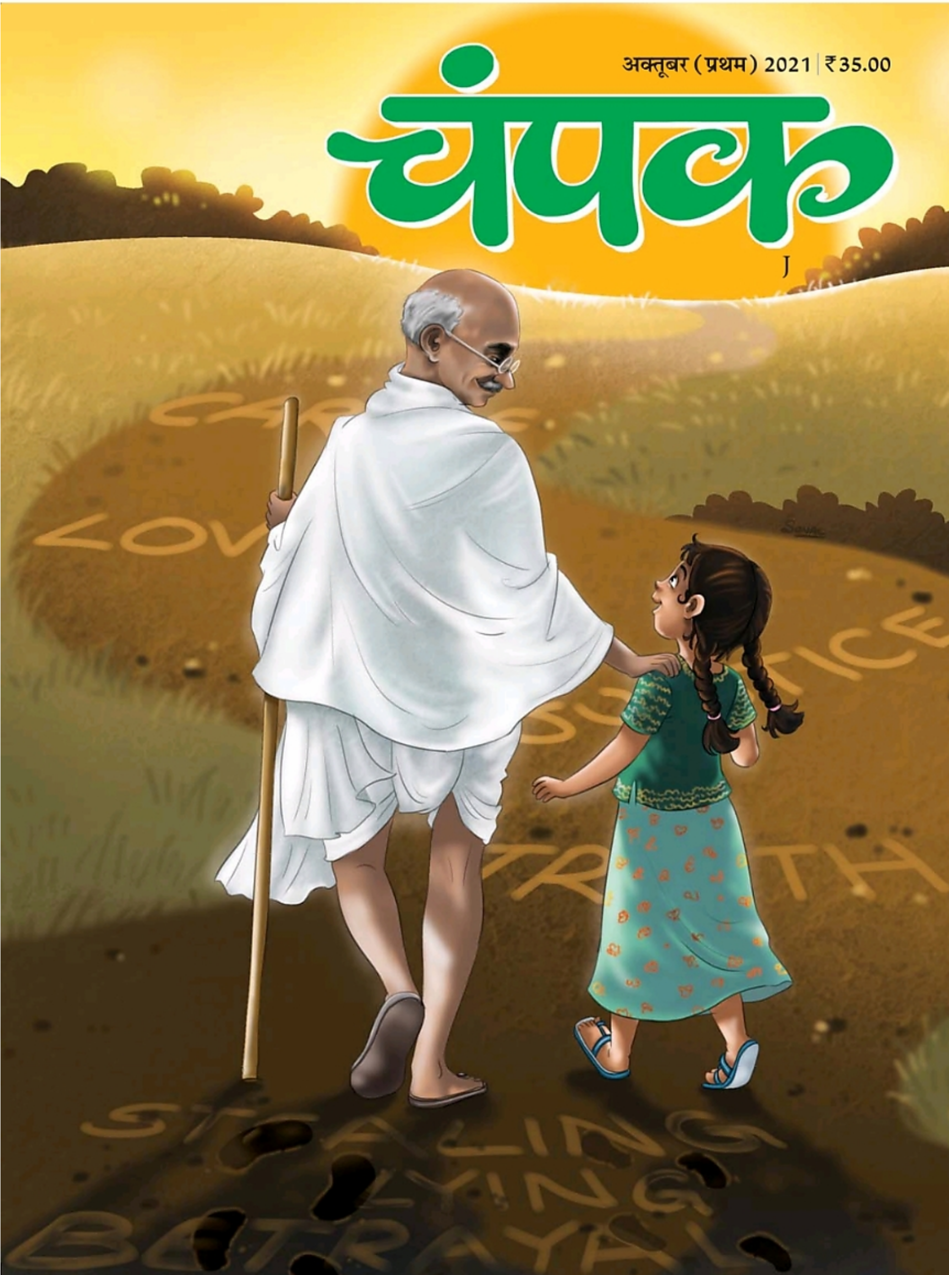
CAR
LOV
JUSTICE
TR TH
STEALING
LYING
BETRAYAL

VISIT…

LANZAROTE Caliente.COM

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

New Pack
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
STOMAFIT LIQUID
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
KEEPS STOMACH FIT & HEALTHY
STOMAFIT CHEWABLE

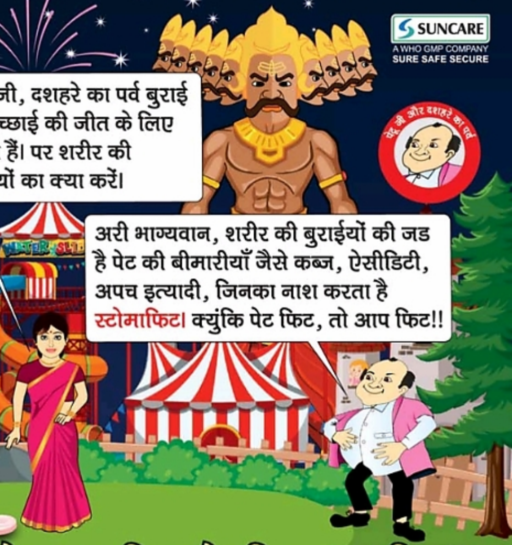
सुनो जी, दशहरे का पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए मनाते हैं। पर शरीर की बुराईयों का क्या करें।
अरी भाग्यवान, शरीर की बुराईयों की जड है पेट की बीमारीयाँ जैसे कब्ज, ऐसीडिटी, अपच इत्यादी, जिनका नाश करता है स्टोमाफिट। क्युंकि पेट फिट, तो आप फिट!!
पेटू जी और दशहरे का पर्व

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

रखे स्टमक फिट, पेट फिट, आप फिट!!

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

क्रोध, कपट, कटुता, कलह, चुगली या अत्याचार !
दगा, द्वेश, अन्याय या छल ये थे दशानन के हथियार !!
वर्तमान का हथियार है, शरीर में कमजोरी रहना लगातार !
आओ हेमोकॉल के साथ करें इस दशानन पर प्रहार !!

New Pack
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

आपको और आपके परिवार को
दशहरे
की हार्दिक शुभकामनाएं

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com
सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपल्बध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें

चंपक

अक्तूबर (प्रथम) 2021 अंक : 1222

सुनो कहानी

बालबाल बचे 4
अज्ञान बनाम विज्ञान 12
प्रतियोगिता 18
समाधान 22
उड़ानहीन की तलाश में उड़ान 29
मेहनत रंग लाई 40
अंगूर मीठे हैं 47

मुखपृष्ठ

महात्मा गांधी हमें सिखाने के लिए कई अध्याय और अभ्यास छोड़ गए हैं. उन्होंने अनुभवों का जीवन जिया. हम इन अध्यायों का इस्तेमाल अपने जीवन में कैसे कर सकते हैं?

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो 8
कबूतरों की मदद करें 9
देखो हंस न देना 10
बताओ तो जानें 16
छिपे चित्र ढूंढ़ें 21
कोलंबस के साथ यात्रा 26
बिंदु मिलाओ 28
एल्मो की मदद करें 33
चित्र पूरा करें 34
स्मार्ट 35
पक्षी की मदद करें 38
अंतर बताओ 46

चित्र कथाएं

डमरू और संपादन 11
चीकू 36
दादाजी और विश्व डाक दिवस 44

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान 17
मेनका आंटी के जवाब 39

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.

Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सोडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

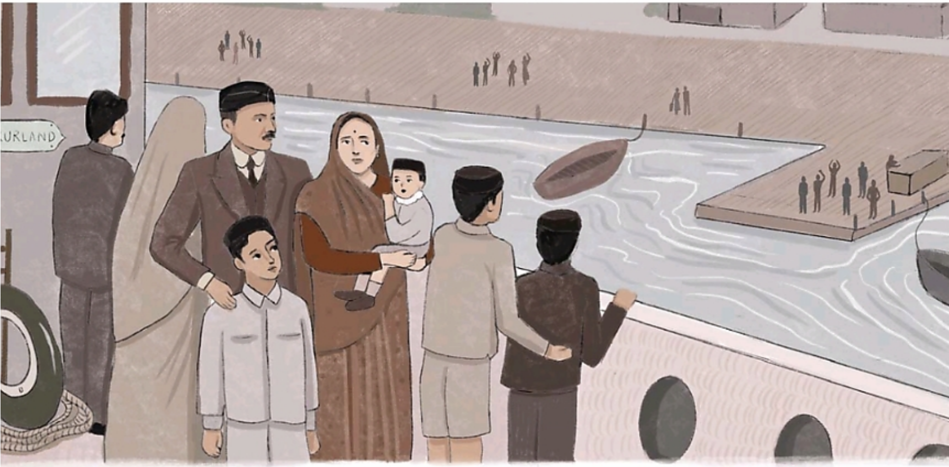

बालबाल बचे

कहानी ● कुमुद कुमार

महात्मा गांधी का सत्याग्रही और आंदोलनकारी जीवन वास्तव में दक्षिण अफ्रीका की धरती से शुरू हुआ था. भारत का स्वतंत्रता आंदोलन तो उन के आंदोलनकारी जीवन का दूसरा पड़ाव था. इसलिए दक्षिण अफ्रीका के संघर्ष को जाने बिना हम गांधीजी को सही से नहीं समझ सकते.

13 जनवरी, 1897 को दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर में उन के साथ भयानक घटना घटी.

18 दिसंबर, 1896 को गांधीजी अपनी पत्नी, बच्चों और अन्य भारतीयों के साथ कुरलैंड स्टीमर से दक्षिण अफ्रीका के डरबन बंदरगाह पहुंचे. लेकिन मैडिकल जांच और अन्य कारणों से इस जहाज के यात्रियों को नीचे उतरने की अनुमति 13 जनवरी, 1897 को ही मिली.

डरबन के गोरे लोग गांधीजी से दो बातों पर नाराज थे. उन का मानना था कि गांधीजी ने भारत में दक्षिण अफ्रीका के नेटाल निवासी गोरे लोगों की गलत निंदा की है. दूसरी बात यह थी कि वे सोचते थे कि गांधीजी नेटाल को भारतीय लोगों से भर देना चाहते थे और इसलिए वे दो जहाजों में भारतीयों को भर कर लाए हैं.

हालांकि दोनों ही आरोप गलत थे. फिर भी गांधीजी की सुरक्षा के लिए कुरलैंड स्टीमर के कप्तान को सूचना भेजी गई कि गांधीजी को शाम होने पर ही स्टीमर से उतारा जाए, क्योंकि गोरे उन से बेहद नाराज थे.

दोपहर बाद डरबन के प्रसिद्ध वकील मिस्टर लाटन गांधीजी के जहाज पर पहुंचे. उन्होंने गांधीजी को सलाह दी कि वे अपने परिवार को गाड़ी में बैठा कर रुस्तम जीवनजी के घर ले जाएं. रुस्तमजी भारतीय पारसी समुदाय से थे और डरबन के एक जानेमाने व्यवसायी थे.

वे अपने परिवार को गाड़ी में बैठा कर खुद लाटन के साथ साढ़े 4 बजे पैदल चल पड़े.

यह रास्ता 3 किलोमीटर लंबा था और एक घंटे में

इस रास्ते रुस्तमजी के घर पहुंचे.

जैसे ही गांधीजी बंदरगाह से बाहर आए, गोरे लोगों ने उन की विशेष टोपी से उन्हें पहचान लिया. वे चिल्लाए, 'गांधी, गांधी, मारो, उसे मारो, उसे पकड़ लो,' चिल्लाने की आवाज सुन कर कुछ ही देर में वहां भीड़ इकट्ठी हो गई, उन में से कुछ गोरों ने उन पर कंकड़, पत्थर और अंडे फेंकने शुरू कर दिए.

लाटन ने महसूस किया कि अकेले चलने में खतरा है तो उन्होंने एक रिक्शे चलाने को बुलाया, लेकिन गोरे लोगों ने उसे यह कह कर डरायाधमकाया, "अगर तू ने गांधी को अपने रिक्शे में बैठाया तो तुझे पीटेंगे और तेरा रिक्शा भी तोड़ दें.

यह सुन कर वह रिक्शा चालक डर गया और अपनी भाषा में 'खा' (नहीं) कह कर वहां से चला गया.

लाटन और गांधीजी के पास पैदल चलने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था. उधर गोरों की भीड़ बढ़ती जा रही थी. तभी एक लंबेचौड़े भारीभरकम आदमी ने लाटन को उठा कर गांधीजी से अलग कर दिया. गांधीजी पर फेंके जा रहे कंकड़पत्थरों की बौछार और तेज हो गई. इसी धक्कामुक्की में किसी ने गांधीजी की टोपी उछाल कर उन्हें जमीन पर गिरा दिया.

इस के बाद जो हुआ, वह और भी अपमानजनक था. एक मोटातगड़ा गोरा आदमी गांधीजी के पास आया. उस ने आते ही गांधीजी के गाल पर एक जोरदार थप्पड़ मारा और फिर उन्हें लात मारी तथा जमीन पर धकेल दिया.

गांधीजी चक्कर खा कर गिरने ही वाले थे कि एक मकान की जाली उन के हाथ में आ गई, थोड़ा दम भर कर वे फिर आगे बढ़े.

उन्मादी भीड़ से बचने की उम्मीद तो खत्म हो चुकी थी. भीड़ लगातार उन को तमाचे जड़ रही थी.

इसी बीच एक पुलिस अधिकारी की पत्नी श्रीमती एलैक्जेंडर वहां से गुजरी. वह गांधीजी को जानती थी. वह उन के पास आई और धूप तेज होने के कारण उस ने अपना छाता गांधीजी के ऊपर खोल दिया. फिर वह उन के साथसाथ चलने लगी. अब गोरों की भीड़ क्या करे? वह एक गोरी महिला और पुलिस अधिकारी की पत्नी पर कैसे हमला कर सकते थे? फिर भी भीड़ महिला को बचा कर गांधीजी पर हमला करती रही.

यह देख कर एक हिंदुस्तानी नौजवान ने इस की सूचना पुलिस कांस्टेबल एलैक्जेंडर को थाने में दी. उस ने गांधीजी को बचाने के लिए पुलिस की एक

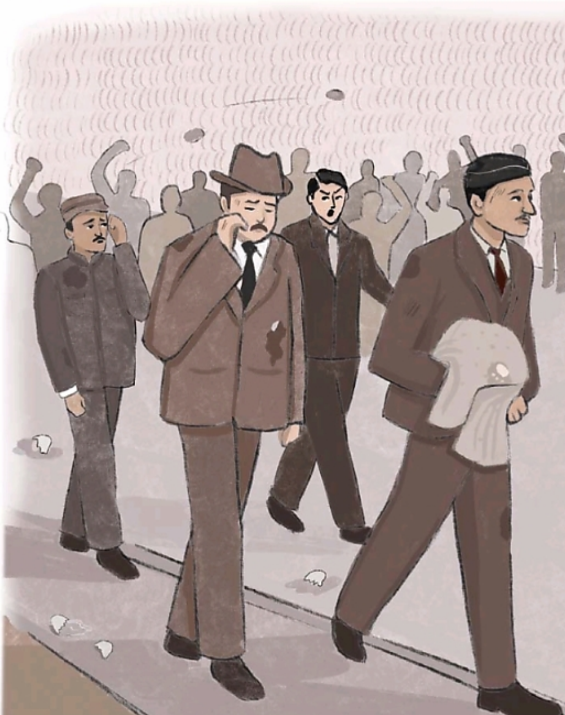

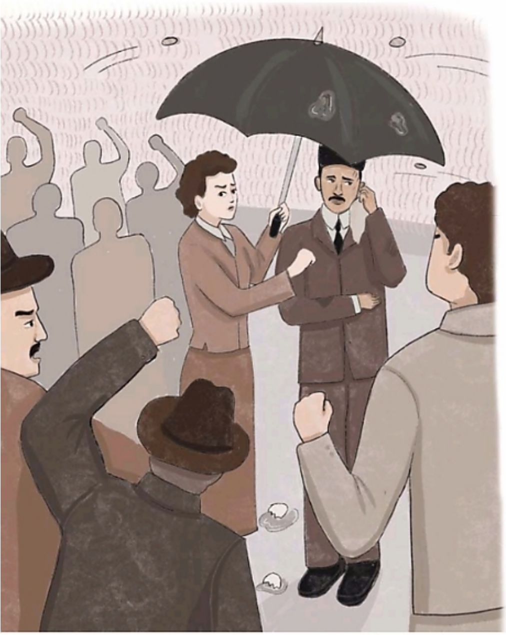

टुकड़ी भेज दी. पुलिस गांधीजी को ले कर थाने आ गई.

उस ने गांधीजी को थाने में रुकने की सलाह दी, लेकिन गांधीजी ने कहा, ''जब लोगों को अपनी गलती पता चलेगी तो वे खुद ही शांत हो जाएंगे.''

वे बिना किसी परेशानी के रुस्तमजी के घर पहुंचे. डाक्टर ने उन के घावों की जांच की और उन का इलाज शुरू किया. गांधीजी को एक गुम चोट आई थी जो उन को ज्यादा तकलीफ दे रही थी. उन के घाव से खून भी बह रहा था. डाक्टर ने उन्हें आराम करने की सलाह दी, लेकिन बाहर के हंगामे ने उन्हें चैन की सांस नहीं लेने दी.

सैकड़ों गोरों की भीड़ ने उन के घर को पूरी तरह घेर लिया था. रात की शामिल होने वाले कुछ गुंडों ने रुस्तमजी को यह धमकी दी, ''अगर तुम ने गांधी को हमारे हवाले नहीं किया तो तुम्हें और तुम्हारी दुकानों को आग के हवाले कर दिया जाएगा.''

पुलिस कांस्टेबल एलैक्जेंडर को इस नई बात का पता चला. वह अपने अधिकारियों के साथ गुपचुप तरीके से पहुंचे. उन्होंने एक बेंच मंगवाई और उस पर खड़े हो कर भीड़ से बात करने लगे.

इस बहाने उन्होंने रुस्तमजी के घर के दरवाजे को घेर लिया, जिस से न तो कोई दरवाजे पर हमला कर सके और न ही कोई घर के अंदर घुस सके.

एलैक्जेंडर ने अपने खुफिया विभाग के आदमी भीड़ में जगहजगह खड़े कर दिए. उन्होंने अपने कर्मचारियों से हिंदुस्तानी व्यापारी की ड्रैस पहनने और मुंह पोत कर हिंदुस्तानी जैसा बनने का आदेश दिया. वे भारतीयों की तरह ही लग रहे थे.

इस के बाद एलैक्जेंडर ने गांधीजी को संदेश

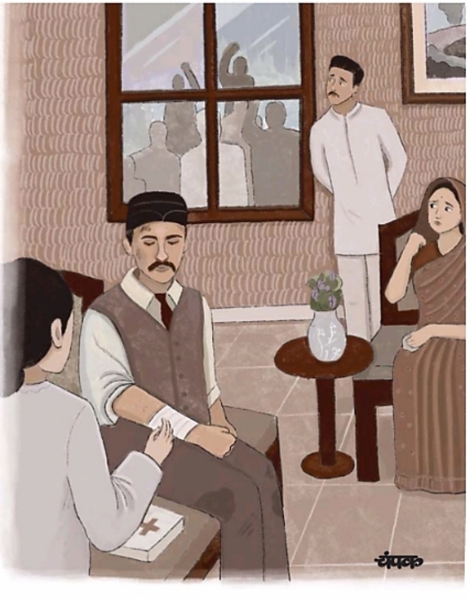

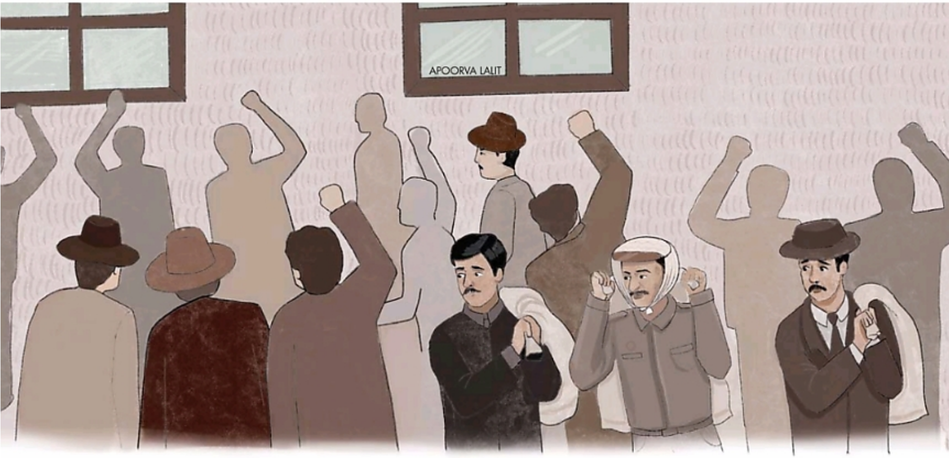

भिजवाया कि यदि वह अपने मित्र रुस्तमजी के मकान, दुकान और अन्य सामान की हिफाजत चाहते हैं और इस के साथसाथ अपने परिवार को भी सुरक्षित चाहते हैं तो जैसा मैं कहूं वैसा करें. उन्होंने ने गांधीजी को भारतीय सिपाही के कपड़े को दिए.

गांधीजी ने सहमति जताई और पहनने सिपाही की वर्दी पहन ली. सिर को चोट से बचाने के लिए उन्होंने सिर पर पीतल की एक तश्तरी रख दी और ऊपर एक बड़ा सा साफा बांध लिया.

फिर वे एक बिजनैसमैन की ड्रैस में अधिकारी के साथ चले गए. उन के साथ एक पुलिस वाला भी था.

उन्होंने पड़ोस की दुकान से सीमेंट की कुछ बोरियां लीं और भीड़ के बीच से निकल गए. कुछ दूरी पर एक नुक्कड़ पर एलैक्जेंडर गाड़ी में उन का इंतजार कर था. गांधीजी उस में बैठ कर सुरक्षित थाने पहुंच गए. भीड़ को गांधीजी के सुरक्षित निकलने की भनक भी नहीं लगी.

जब गांधीजी भीड़ के बीच से निकल रहे थे, तब एलैक्जेंडर भीड़ से गाना गवा रहा था, ''चलो, हम गांधी को फांसी पर लटका दें, ''

जब एलैक्जेंडर को गांधीजी के सुरक्षित थाने पहुंचने की खबर मिली तो तब उस ने भीड़ से कहा, ''अरे, आप का शिकार तो इस दुकान से सही सलामत बच कर भाग चुका है.''

यह सुन कर भीड़ हैरान हो गई. किसी को गुस्सा आया तो किसी की हंसी छूट गई, किसी को तो इस बात पर यकीन ही नहीं हुआ. तब एलैक्जेंडर ने भीड़ से कहा, ''अगर आप गांधीजी को रुस्तमजी के घर से ढूंढ़ निकालें तो मैं गांधीजी को आप को सौंप दूंगा. उस के बाद आप गांधीजी का चाहे जो करें.''

भीड़ में से 3-4 आदमियों का एक ग्रुप बनाया गया. इन लोगों ने रुस्तमजी के घर का कोनाकोना छान मारा, लेकिन गांधीजी कहीं नहीं मिले. क्रोधित भीड़ ने एलैक्जेंडर की होशियारी की प्रशंसा की और धीरेधीरे भीड़ तितरबितर हो गई.

इस प्रकार गांधीजी की खबर ब्रिटिश सरकार तक पहुंची और औपनिवेशिक सचिव जोसेफ चेंबरलोन ने दंगाइयों के खिलाफ कार्रवाई का आदेश दिया. हालांकि गांधीजी ने कार्रवाई के खिलाफ अनुरोध किया.

''हमलावर युवा थे, वे गलत खबरों से भ्रमित हो गए,'' उन्होंने सरकार को लिखा. ●

सुंदर रंग भरो

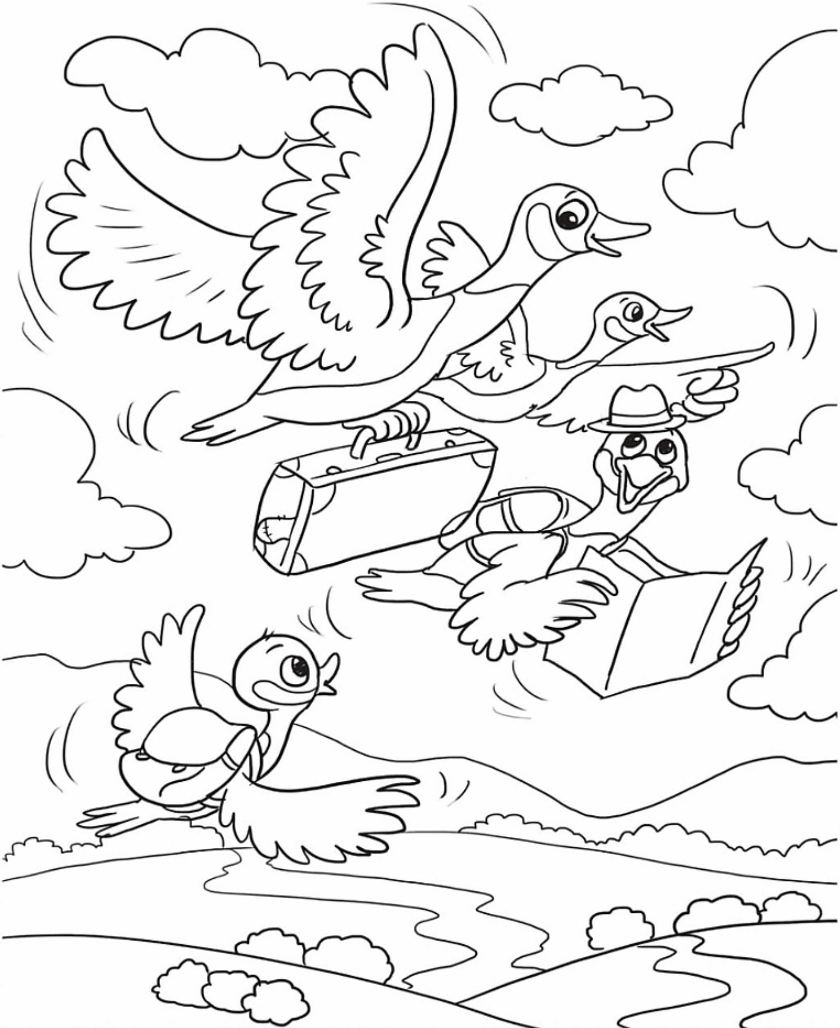

कबूतरों की मदद करें

9 अक्तूबर को विश्व डाक दिवस है. भारत के शहरों के नाम जो उल्टेपुलटे लिखे हैं, उन को सही क्रम में लिखें और कबूतरों की अपने गंतव्य शहरों तक पहुंचने में मदद करें.

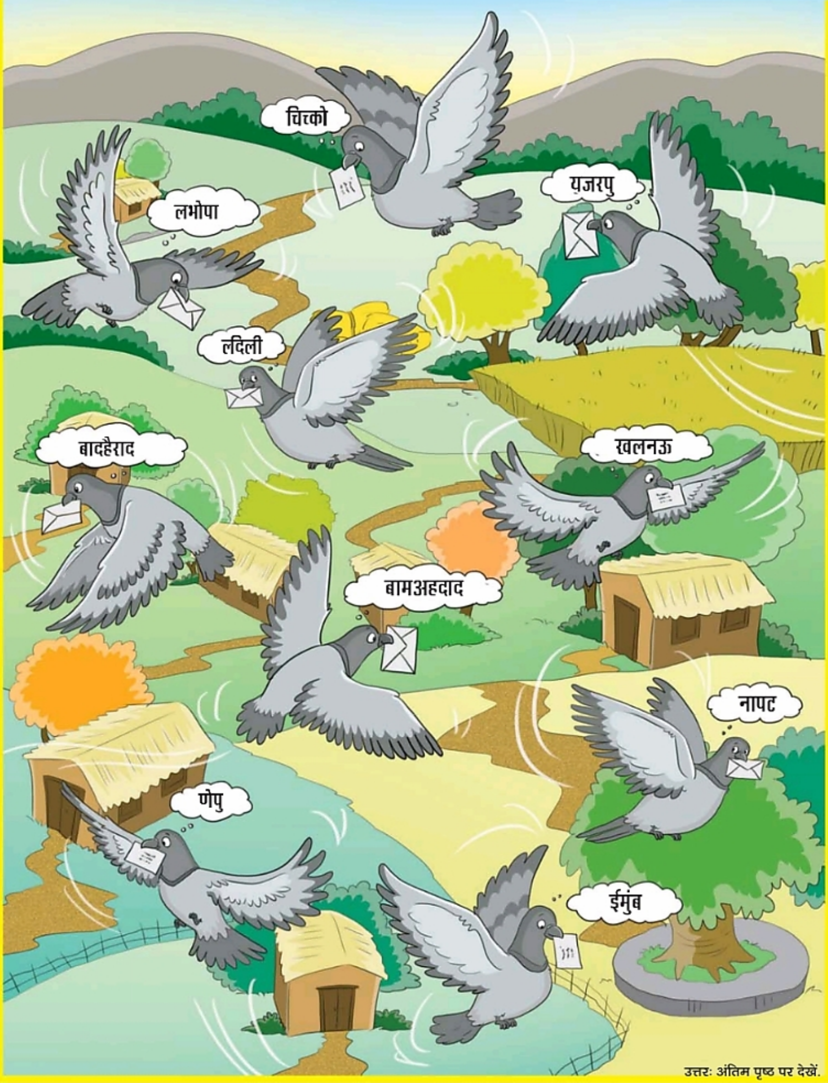
चित्को
यजरपु
लभोपा
लदिली
बादहैराद
खलनऊ
बामअहदाद
नापट
णेपु
ईमुंब

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

देखो हंस न देना

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

रोहन (सोहन से) : घोस्ट यानी भूत के डेजर्ट यानी मिठाई को क्या कहोगे?

सोहन : बू बेरी पाई.

अथर्व पूजारी, 6 वर्ष

बैंगलुरु

टीचर (क्रिस्टी से) : क्रिस्टी, इस वाक्य के वाच्य यानी वौइस को बदलो, ''उस की मम्मी ने चिकन पकाया.''

क्रिस्टी : मैम, इस का उत्तर है, ''चिकन ने उस की मम्मी को पकाया.''

टीचर : क्या?

रानिशा मित्रा, 12 वर्ष,

कोलकाता

टीचर ने सभी छात्रों से एक पैराग्राफ लिखने के लिए कहा.

टीचर : अक्षर क्यों दूरदूर होते हैं और वह एक ही लाइन में क्यों नहीं होते?

छात्र : वे सोशल डिस्टैंसिंग का पालन करते हैं.

यथार्थ शाह, 7 वर्ष,

मुंबई

किट्टू (सीटू से) : पैंसिल ने रबर से क्या कहा?

सीटू : मुझे अपने रूलर के पास ले चलो.

सिद्धार्थ गौतम, 9 वर्ष,

उत्तर प्रदेश

टीचर (रवि से) : राजा आर्थर, कब मरे?

रवि : कल, जब आप ने इस के बारे में हमारी टेक्स्टबुक में पढ़ा.

धीर केजरीवाल, 10 वर्ष

कोलकाता

मेघ (चार्मी से) : एक साल में कितने सैकेंड्स होते हैं?

चार्मी : 12 सैंकड्स

मेघ : कैसे?

चार्मी : जनवरी सैकंड, फरवरी सैकंड, मार्च सैकंड, अप्रैल सैकंड.

चार्मी छावड़ा, 12 वर्ष

वडोदरा

राजू (शामू से) : शामू, तुम उल्टे क्यों लटके हुए हो?

शामू : क्योंकि मेरे सिर में दर्द हो रहा है.

राजू : तो तुम उल्टे क्यों लटके हो?

शामू : मैं ने अभीअभी सिरदर्द की दवा खाई है और मैं नहीं चाहता कि यह सिर की जगह पेट में चली जाए.

दक्ष प्रताप सिंह, 12 वर्ष

जोधपुर

चीकू (मीशू से) : जब कार बाएं मुड़ती है तो कौन सा व्हील (पहिया) आगे बढ़ता है?

मीशू : स्पेयर व्हील.

श्रीयांश शिव कुमार, 10 वर्ष

मैसूर

आशू (मिंटू से) : जब मेढ़क का पैर जख्मी हो गया तो उस ने क्या कहा?

मिंटू : मैं कूद नहीं पा रहा हूं.

सानव, 9 वर्ष

पटना

हर्ष (विवेक से) : वह कौन सी चीज है जो फर्श को चाटती है और एक किनारे जा कर बैठ जाती है?

विवेक : झाड़ू.

गणपति मानस्विनि, 10 वर्ष

तितिलागढ़

सोनू (मोनू से) : मैं हमेशा हैरान होती हूं कि हारर मूवी में लोग घोस्ट से क्यों कहते हैं, ''हैलो.''

मोनू : जैसे की घोस्ट जवाब देगा, ''हैलो, मैं यहां किचन में हूं, आओ, एक कप कौफी पीते हैं और बात करते हैं.

अवंतिका वर्मा, 12 वर्ष

लखनऊ

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : writetochampak@delhipress.in
और SMS: 8657402248
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और संपादन

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

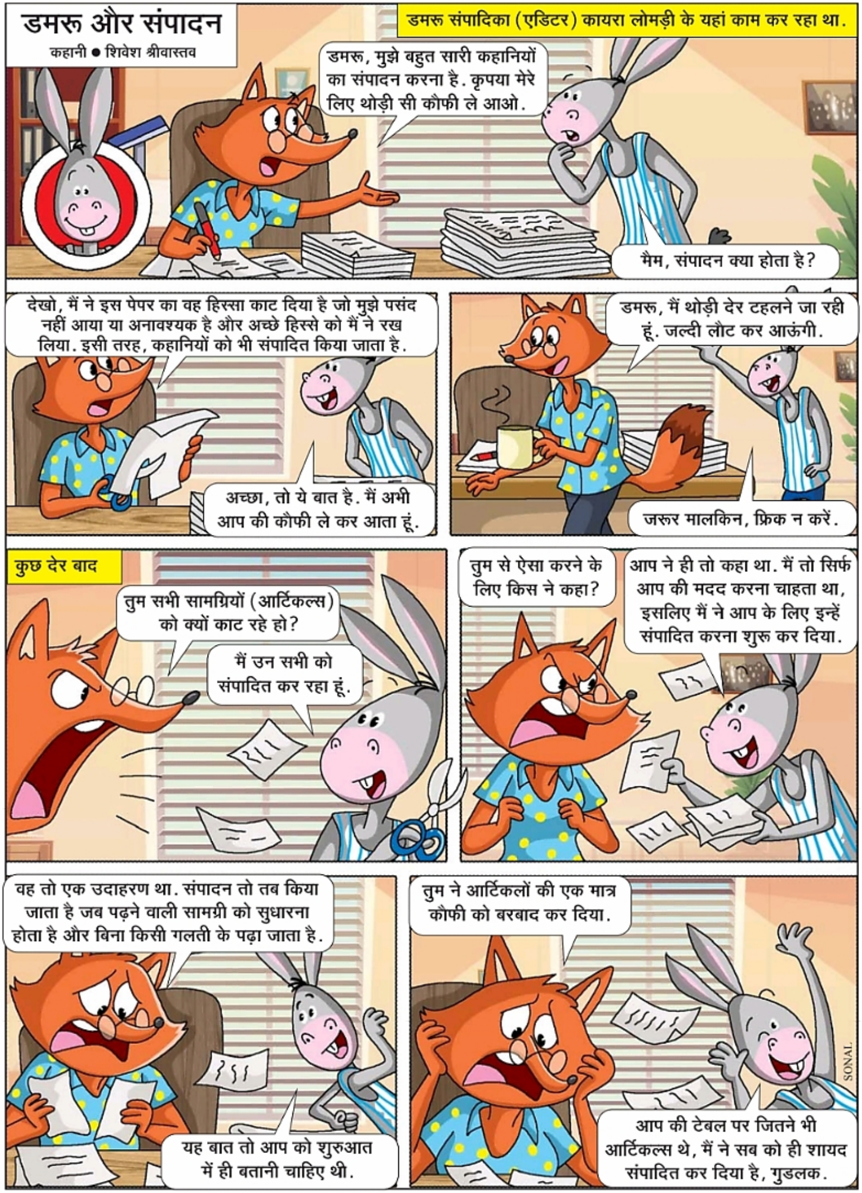
डमरू संपादिका (एडिटर) कायरा लोमड़ी के यहां काम कर रहा था.
डमरू, मुझे बहुत सारी कहानियों का संपादन करना है. कृपया मेरे लिए थोड़ी सी कौफी ले आओ.
मैम, संपादन क्या होता है?
देखो, मैं ने इस पेपर का वह हिस्सा काट दिया है जो मुझे पसंद नहीं आया या अनावश्यक है और अच्छे हिस्से को मैं ने रख लिया. इसी तरह, कहानियों को भी संपादित किया जाता है.
अच्छा, तो ये बात है. मैं अभी आप की कौफी ले कर आता हूं.
डमरू, मैं थोड़ी देर टहलने जा रही हूं. जल्दी लौट कर आऊंगी.
जरूर मालकिन, फ्रिक न करें.
कुछ देर बाद
तुम सभी सामग्रियों (आर्टिकल्स) को क्यों काट रहे हो?
मैं उन सभी को संपादित कर रहा हूं.
तुम से ऐसा करने के लिए किस ने कहा?
आप ने ही तो कहा था. मैं तो सिर्फ आप की मदद करना चाहता था, इसलिए मैं ने आप के लिए इन्हें संपादित करना शुरू कर दिया.
वह तो एक उदाहरण था. संपादन तो तब किया जाता है जब पढ़ने वाली सामग्री को सुधारना होता है और बिना किसी गलती के पढ़ा जाता है.
यह बात तो आप को शुरुआत में ही बतानी चाहिए थी.
तुम ने आर्टिकलों की एक मात्र कौफी को बरबाद कर दिया.
आप की टेबल पर जितने भी आर्टिकल्स थे, मैं ने सब को ही शायद संपादित कर दिया है, गुडलक.
SONAL

अज्ञान बनाम विज्ञान

कहानी ● हरबंश सिंह

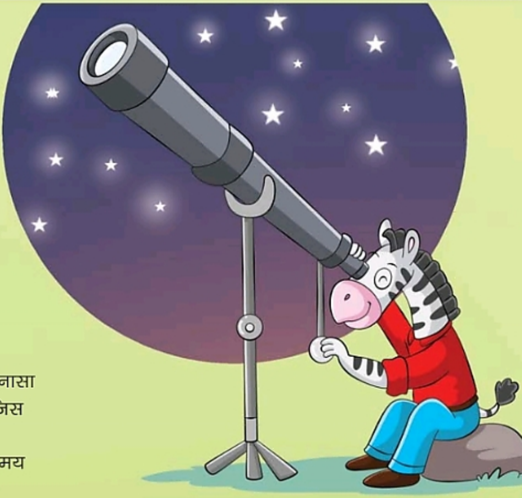

जिब्बी जेबरा अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा से रिटायर हो कर लौटा था. दुर्भाग्य से जिस चंपकवन में वह रहता था, वहां कोई जानवर पढ़ालिखा न था. यहां लौटते ही उस के बुरे समय की शुरुआत हो गई.

जिब्बी अंतरिक्ष वैज्ञानिक था और दूरबीन ले कर आकाश में घंटों देखा करता था.

चंपकवन के जंगलवासियों को यह बात बड़ी अजीब लगती थी. इसलिए वे जिब्बी को मानसिक रूप से बीमार समझते थे.

ब्लैकी भालू जंपी बंदर, बैडी गीदड़ और जोजो सियार की चंडाल चौकड़ी थी. वन के जीवों को बेवकूफ बना कर वे ज्योतिष और वैद्य का काम करते थे. जिब्बी के आने से उन का धंधा चौपट होने वाला था.

ब्लैकी भालू इस चंडाल चौकड़ी का मुखिया था. ''आप हरे नग की अंगूठी पहनो, हरी दाल दान करो,'' वह बीमार जानवरों को बेकार की सलाह दे कर उस के बदले मोटी रकम लेता था. उस का

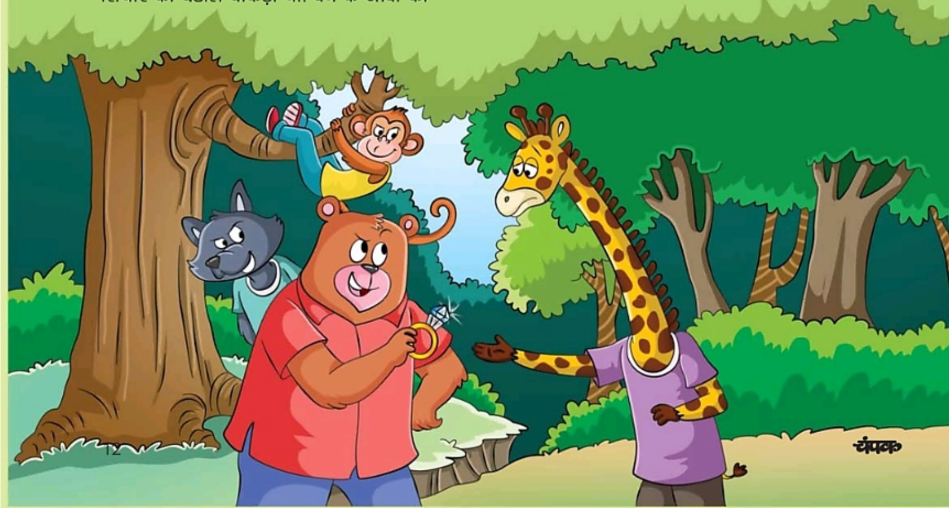

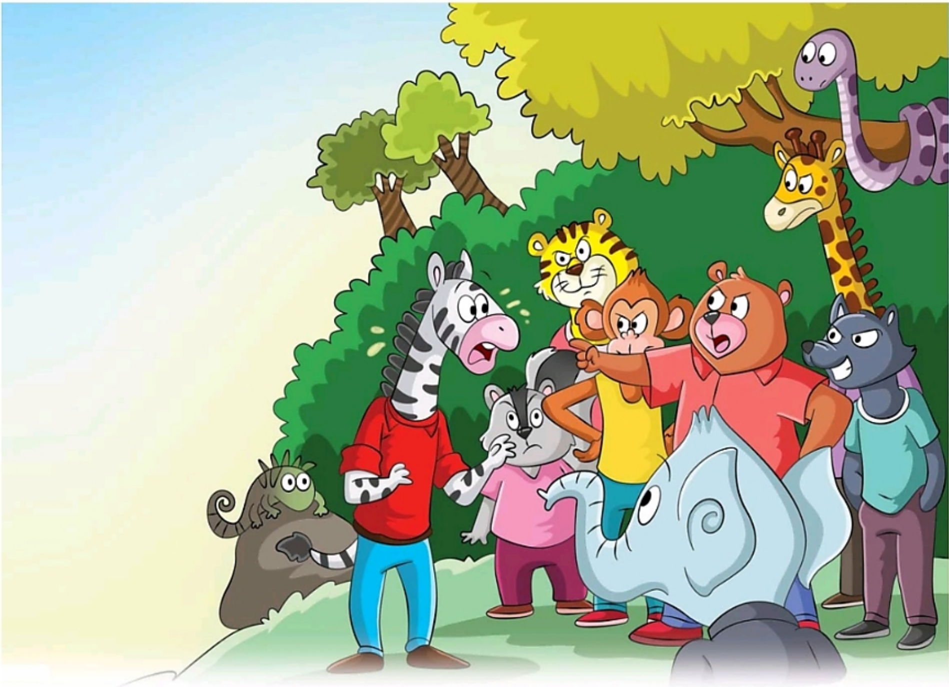

ज्ञान अलगअलग रंगों की अंगूठियां बेचने और काली दाल, हरी दाल, पीली दाल दान करने तक ही सीमित था. साथ ही वह ताबीज भी दिया करता था.

''बैडी सुनो, जानवरों को ताबीज बेचते हुए तुम्हें यह मंत्र भी बोलना है, मुझे कुछ नहीं पता फिर भी मैं सब जानता हूं,'' ब्लैकी भालू ने समझाया.

''नहीं गुरुजी, इस का मतलब मैं मूर्ख हूं, लेकिन मैं सबकुछ जानता हूं,'' बैडी असहमत था, लेकिन जब ब्लैकी ने उसे डांटा तो उस ने बात करनी बंद कर दी. ब्लैकी भालू के दादाजी इसी मंत्र का जाप करते थे.

जंपी बंदर पूंछ के सहारे पेड़ की डाली से लटका झूला झूल रहा था. उस ने सुझाव दिया, ''जिब्बी मानसिक रूप से बीमार है और उसे पागलखाने भिजवा सकें, तो हमारा धंधा चलता रहेगा,'' चंडाल चौकड़ी को यह चाल अच्छी लगी.

जंपी ने जंगल के सभी जानवरों की मीटिंग बुलाई, सभी गोला बना कर खड़े हुए थे. जंपी ने कहा, ''जिब्बी हर समय अपने पाइपों के माध्यम से क्या खोजता रहता है? और अगर उसे कुछ मिल भी जाता है तो उसे वह यहां कैसे लाएगा, उसे मानसिक अस्पताल भेजने के लिए आप को और सुबूत चाहिए?''

सभी ने ताली बजाते हुए जंपी का समर्थन किया.

जिब्बी के यह बात सुन कर होश उड़ गए, वह बोला, ''मैं पागल नहीं वैज्ञानिक हूं.''

''अगर तुम वैज्ञानिक हो तो अभी ब्लैक ऐंड वाइट कैसे हो? तुम रंगीन क्यों नहीं हो जाते? रंगीन

टैलीविजन के दौर में तुम ब्लैक ऐंड वाइट हो,'' बैडी ने मजाक किया.

''प्रकृति के दिए रंग कोई बदल सकता है?'' जिब्बी ने तर्क दिया.

''यह झूठ है, अगर गिरगिट अपना रंग बदल सकता है, तो तुम क्यों नहीं? और तुम वैज्ञानिक होने का दावा करते हो. अब मान भी लो कि तुम पागल हो,'' जोजो ने सब का समर्थन चाहा.

गिरगिट बिजली के खंभे पर बैठा था. शोर सुन कर उस के होश उड़ गए. डर से उस का रंग बदल गया. रंग बदलने की प्रक्रिया वन्यजीवों की आंखों के सामने हुई थी.

''नहीं, मैं पागल नहीं हूं,'' जिब्बी झुंझला कर बोला.

''हर पागल यही कहता है,'' सब ने निष्कर्ष निकाला.

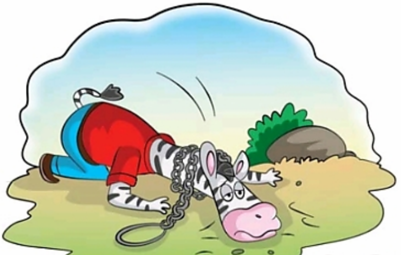

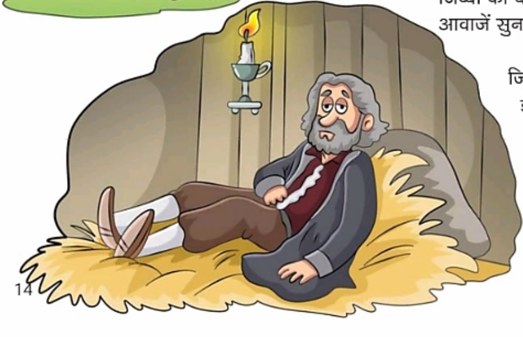

''मेरा बड़ा भाई, मेरी छोटी बहन, मेरे चाचा, मेरे मामा, मेरे सबकुछ कृपया मेरी बात सुनो, अगर मैं कहूं कि मैं सचमुच पागल हूं. तो क्या तुम मुझे छोड़ दोगे?''

''जब तुम खुद ही कह रहे हो कि तुम पागल हो, तो हमें ऐतराज कैसे हो सकता है?'' ब्लैकी भालू ने कहा तो सब तालियां पीटने लगे.

''यानी दोनों बातें कि मैं पागल नहीं हूं और मैं पागल हूं, तुम मुझे छोड़ने वाले नहीं हो. इटली के अंतरिक्ष वैज्ञानिक गैलीलियो कहते कि सूर्य धरती का चक्कर नहीं लगाता बल्कि पृथ्वी सूर्य के इर्दगिर्द घूमती है, तो लोगों ने उसे पागल समझ लिया था उसे सजा भी दी. आज गैलीलियो की थ्योरी को हम सही मानते हैं.''

जिब्बी ने सब से पूछा, ''मुझे बताओ कि अगला सूर्यग्रहण कब लगेगा? कितने समय तक रहेगा? तुम में से कोई यह बता सकता है क्या?''

जोजो सियार ने कहा, ''सुनो, इस सिरफिरे की बातें, इसे पागलखाने भेजो वरना यह हमें भी पागल कर देगा,'' झूठों का सरताज ब्लैकी भालू कहां पीछे रहने वाला था, ''भाइयो, जिब्बी कह रहा था कि वह इतना बड़ा वैज्ञानिक है कि सूरज को मोमबत्ती की तरह फूंक मार कर बुझा सकता है,'' उस की झूठी कहानी पर सब ने विश्वास कर लिया.

''पागल है. निहायत पागल, धोखेबाज भी है, कोई जिब्बी की बेगुनाह याचना नहीं करेगा,'' सैकडों आवाजें सुनाई देने लगीं.

जिब्बी ने असहाय हो कर भीड़ पर नजर डाली. पड़ोसी हिरण परिवार, सामने पेड़ पर रहने वाला भारीभरकम अजगर, जिस के पीले शरीर पर काली धारियां थीं, सब गुमसुम थे. सब की आंखों में तिरस्कार, आक्रोश भरा हुआ था.

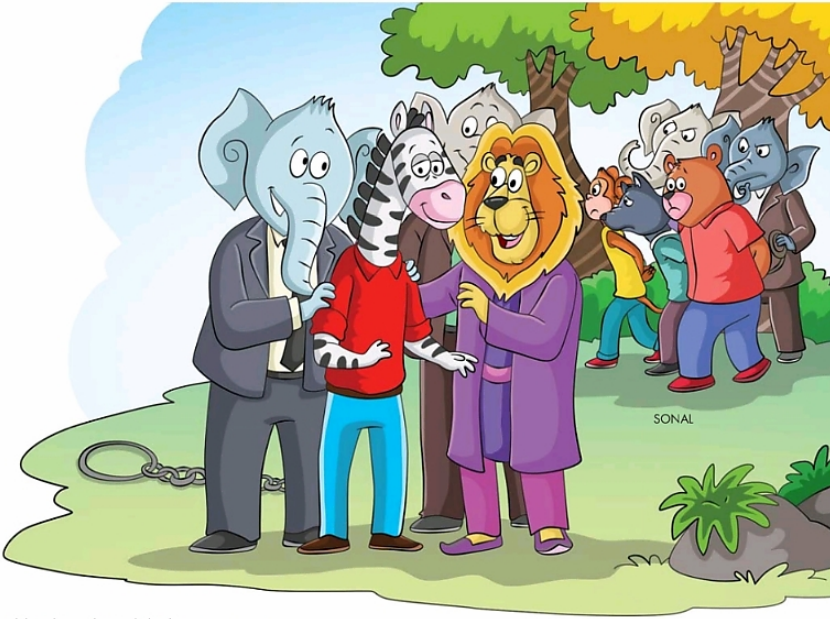

जिब्बी को लोहे की भारी जंजीरों में जकड़ा गया था. ''क्या गुनाह है मेरा?'' जिब्बी असहाय था.

''काश, कहीं कोई एक भी आवाज कानों में आ कर कहे, 'जिब्बी तुम बुद्धिमान हो, पागल नहीं,' पर यहां तो सन्नाटा पसरा है.''

निराश हो का जिब्बी ने गरदन झुकाई. एक आह भरी, उस की उम्मीद टूटी. उस के पांव कांपने लगे और वह मुंह के बल धरती पर औंधेमुंह गिर पड़ा. उस के नाक और मुंह में धूल भर गई, जिस से उसे लगातार खांसी रहती थी. उस दिन एक और निर्दोष गैलीलियो को सजा मिली.

भारी जंजीरों से जिब्बी की गरदन में घाव हो गए थे. भीड़ में से एक पत्थर वहीं उस के पांव पर लगा. जिब्बी कराह उठा.

तभी शेर महाराज 4 मेहमान हाथियों के साथ मीटिंग में पहुंचे. चारों हाथियों को यूनीसेफ यानी संयुक्त राष्ट्र बाल कोष यूनैस्को अर्थात संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन ने कल्याण कार्यों के लिए यहां भेजा था. सारी बात समझ कर उन हाथियों ने कहा, ''जिब्बी पागल नहीं है. वास्तव में वह सब से समझदार है और तुम मूर्खों ने उसे ही पागल घोषित कर दिया है, उसे तुरंत रिहा करो. वह तो अंतरिक्ष विज्ञान का प्रोफैसर है.''

हाथी फिर शेर सिंह की तरफ मुड़े और बोले, ''अफसोस की बात है कि आप के जंगल में एक भी स्कूल नहीं है. आप स्कूल खुलवाइए, पैसा हम पर दिलवाएंगे.''

महाराज भी समझ गए कि हमारी सोच मान्यताओं के आधार पर नहीं, बल्कि तर्क और विज्ञान आधारित होनी चाहिए.

तब ब्लैकी भालू, जंपी बंदर, बैडी गीदड़ और जोजो सियार रोनी सूरत लिए खिसकने लगे. जिब्बी वन का शिक्षा मंत्री नियुक्त किया गया. ब्लैकी भालू और उस के साथी अब जेल में रह कर पढ़ते हैं. ●

बताओ तो जानें

1. मैं ऊपर जाता हूं
नीचे भी आता हूं
लोग चलते हैं मेरे ऊपर
लेकिन मैं कभी न आगे बढ़ता.

2. मेरा हेड भी है
मेरी टेल भी है
पर मेरा शरीर नहीं है.

3. मैं पूरे बैकयार्ड के चारों ओर दौड़ता हूं
लेकिन मैं हिलता नहीं
बताओं तो मैं कौन हूं.

4. मैं भिन्नभिन्न रंग का हूं
जब मुझ में हवा भरो
झट से फूल जाता हूं
सुई चुभोया तो फट जाता हूं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. किस मौसम में हमें अपने शरीर में ज्यादा फैट यानी वसा की जरूरत होती है?
   - (क) मानसून
   - (ख) वसंत
   - (ग) सर्दी
   - (घ) गरमी

2. किन दो देशों में युद्ध हुआ जो 100 साल तक चला?
   - (क) फ्रांस और इंगलैंड
   - (ख) यूनान और फारसी सेना
   - (ग) इंगलैंड और चीन
   - (घ) उपरोक्त में कोई नहीं.

3. निम्नलिखित में से कौन सा स्तनधारी इंटैलिजैंट है?
   - (क) व्हेल
   - (ख) डालफिन
   - (ग) हाथी
   - (घ) कंगारू

4. कौन सी धातु एक बड़े शहर की हवा को प्रदूषित कर देती है?
   - (क) तांबा
   - (ख) क्रोमियम
   - (ग) कैडमियम
   - (घ) सीसा (लेड)

उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ग, 2–क, 3–ख, 4–घ.
उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–सीढ़ी, 2–सिक्का, 3–अहाता(बैकयार्ड), 4–गुब्बारा.

मजेदार विज्ञान

पेपर की शक्ति को परखें

आइए, एक पेपर का पिलर यानी खंभा बनाते हैं, जो बहुत सी किताबों को थामे रख सकता है.

आप को चाहिए :

- मोटे चार्ट पेपर
- टेप
- 10 किताबें

ऐसा करें :

1. कार्डस्टौक पेपर को बेलन के आकार में रौल यानी मोड़ें और इसे टेप से चिपका दें. यह सुनिश्चित करें कि यह ज्यादा पतला न हो.

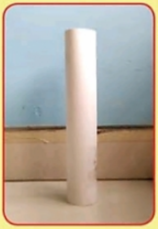

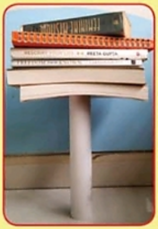

2. टेबल के ऊपर पेपर पिलर को सीधा खड़ा कर के रख दें और एक के बाद एक इस पर किताबें रखना शुरू करें.

देखें :

जब आप किताबें जमा करते हैं तो पेपर का पिलर खड़ा रहता है और तब तक मुड़ता या झुकता नहीं है जब तक कि ढेर सारी किताबें आप इस पर रख नहीं देते.

सोचें :

पेपर का पिलर यानी खंभा किताबों को कैसे थामे रखता है?

इस की वजह है इस का बेलनाकार शेप जो किताबों को थामे रखने में मदद करता है. चूंकि एक वृत्ताकार आकृति में किसी भी तरह का कोई किनारा नहीं होता है, इसलिए किताबों का भार समान रूप से चारों तरफ वितरित यानी बंट जाता है. अगर हम एक अलग आकार का खंभा जैसे त्रिभुज या आयत के रूप में बनाते तो यह कई किताबों को थाम नहीं पाता, क्योंकि भार किनारों पर केंद्रित होता है.

पता करें :

बेलन का आकार किस तरह से उपयोगी है?

पुलों को सीमेंट के बेलनाकार खंभों के द्वारा इस की लंबाई के साथ सपोर्ट यानी सहारा दिया जाता है. ये स्तंभ यानी खंभे दिखने में तो पतले लगते हैं, लेकिन अपने आकार के कारण ये भारी पुल और इस के ऊपर गुजरने वाली सभी कार, बसें, ट्रेनों के भार को झेलते हैं. बेलन का आकार होने के कारण भार समान रूप से पिलरों पर वितरित हो जाता है.

इन खंभों के अंदर लोहे की छड़ें भी होती हैं, लेकिन यह तो खंभों का आकार ही है जो इसे इतना भारी वजन थामे रखने की क्षमता यानी शक्ति प्रदान करता है.

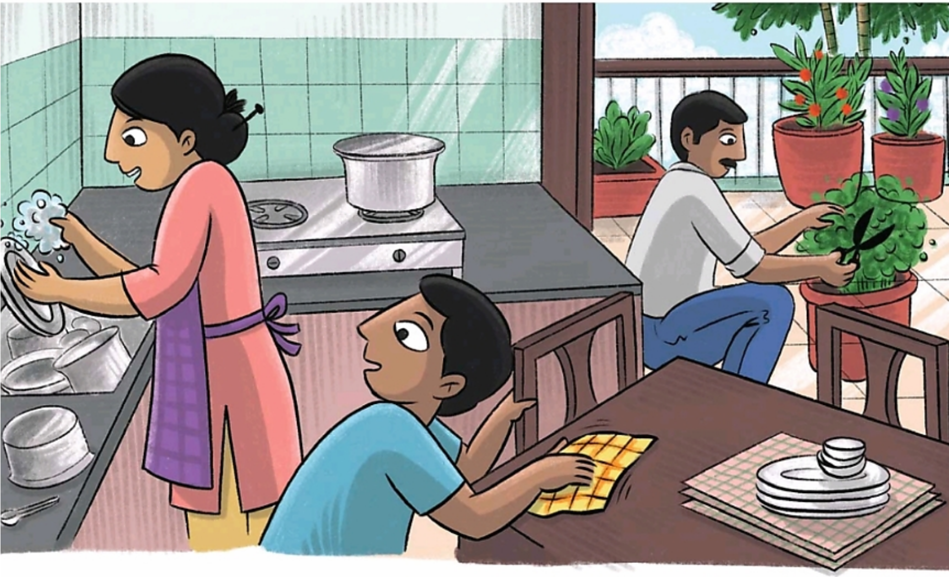

प्रतियोगिता

कहानी ● पूनम पांडे

मानव को लगा कि वह बहुत बदल गया है. वह 15 दिन से घर पर था और उसे लगा जैसे पूरी दुनिया ही बदल गई है.

कोरोना वायरस ने सब को बंदी बना दिया था. हालांकि बाहर न निकलना फायदेमंद रहा. सारी दुनिया आज एक नए तरह के अनुभव का एहसास कर रही थी. मानव भी उस में से एक था.

9 साल का मानव रोज सुबह उठ जाता और मां को घर के काम करते देखता. पहले तो काम वाली आंटी आया करती थी, मगर दो हफ्ते से मां ही काम कर रही हैं. मानव ने चुपके से टेबल और कुरसी की धूल झाड़ी तथा कुछ चम्मच और गिलास देखे तो उस ने चुपके से उन्हें धो कर एक तरफ रख दिया. उस की मां ने उस की प्रशंसा की और उन्हें उस पर गर्व था.

मानव के पापा को बागबानी का बहुत शौक था और बालकनी में वे गमलों में पालक, टमाटर, धनिया, पोदीना, मिर्च, बैगन आदि के पौधे लगाते थे.

मानव जानता था कि पापा आजकल यहीं से रोजाना पालक तोड़ कर मां को दे देते और मां उस को दाल में मिला कर पकाती थीं. मानव ने सबकुछ ध्यान से देखा. वह काफी बेचैन था. उस का मासूम दिमाग यहांवहां खूब दौड़ता रहता था. उस के दिमाग में एक विचार आया और वह कूद कर बालकनी में चला गया.

एक कोने में दो टब खाली पड़े थे. उस ने उन्हें

साफ किया. फिर वह किचन में गया और मां से उस ने धनिया, सौंफ और राई के बीज मांगे. उस ने उन्हें टब में मिट्टी में दबा दिया. जल्द ही पौधे जम गए. मानव की मां ने सौंफ के हरे पत्ते देखे तो एक दिन सुबह पोहा बनाते समय उस में सौंफ के पत्तों का इस्तेमाल किया. उस में खुशबू और अद्भुत सुगंध थी. शीघ्र ही खुशबू खिड़की से बाहर चली गई. फोन की घंटी बजने लगी और लोग मानव के जिज्ञासु मन की प्रशंसा करने लगे.

यह खबर जंगल की आग की तरह पूरे महल्ले में फैल गई. लोगों ने भी अपनी बालकनियों में गमलों में सौंफ के बीज बोने शुरू कर दिए.

यहां तक कि दादादादी, नानानानी और बूआ ने मानव की खुल कर तारीफ की. मानव ने सोचा कि उस में कुछ तो खास है. मतलब वह बहुत प्यारा बालक है.

उसी दिन उस के एक दोस्त का फोन आया. मां दोनों की गपशप सुन रही थीं, दोस्तों को बचपन से ही हर रविवार को घूमनेफिरने, खानेपीने और नईनई फिल्में देखने को शौक था.

अब वह काफी बोर हो रहा था. मानव के दिमाग में एक मजेदार आइडिया आया. उस ने कहा, ''हमारी सोसायटी में करीब 100 घर हैं ऐसा करते हैं औनलाइन कौंटैस्ट का प्लान बनाते हैं. चलो, कुछ करते हैं और कुछ करवा लेते हैं.''

यह सुन कर उस का दोस्त उत्साहित था. वह तुरंत तैयार हो गया.

''मैं इस बारे में मां से डिस्कस कर के पूरा प्लान बताता हूं,'' मानव की योजना सुन कर मां भी उत्साहित हो गईं.

मां ने कहा, ''मोबाइल से दो मिनट की फिल्म बनाने की प्रतियोगिता रख लो. बहुत अच्छा रहेगा. सब बहुत व्यस्त रहेंगे.''

मानव को यह बात पसंद आई. दोस्त को उस ने दोबारा फोन किया तब तक उस ने बहुत सारे दोस्तों को फोन पर यह बात बता दी थी.

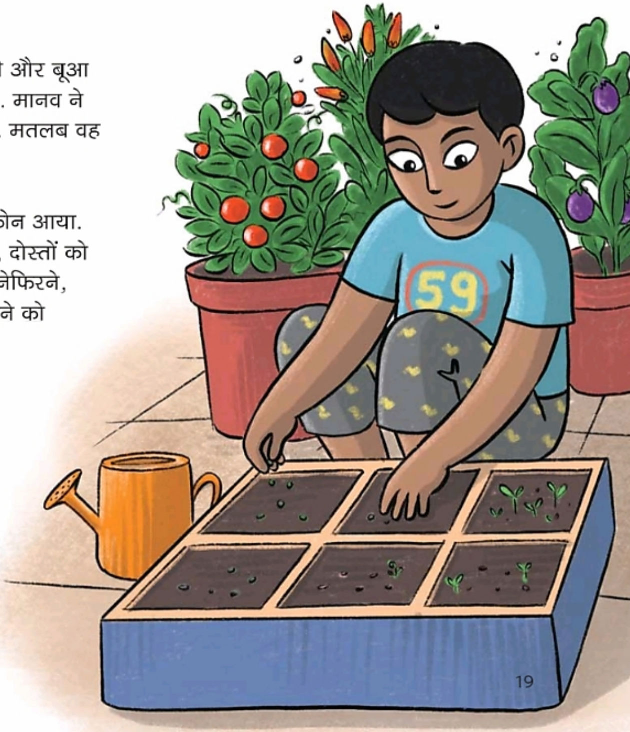

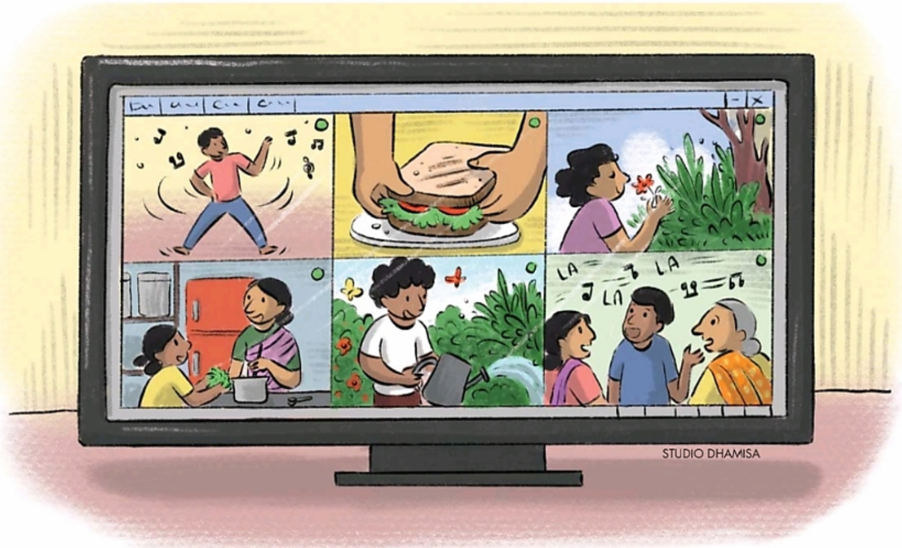

STUDIO DHAMISA

दो मिनट की फिल्म वाला विचार सुपरहिट हो गया. सब तैयार थे और उत्साहित भी, हर किसी ने इस में भाग लिया.

सब ने बहुत अच्छी फिल्में बनाईं. किसी ने दिखाया कि आसपास की हवा कितनी साफ है, सांस लेते हुए उड़ने का अहसास हो रहा है.

किसी ने घर पर सैंडविच बनाते हुए फिल्म में उस की पूरी विधि बता दी. किसी ने रसोई में मां की मदद करते हुए पूरी फिल्म बना डाली, तो किसी ने घर पर अंताक्षरी खेलते हुए मोबाइल पर फिल्म तैयार की. एक फिल्म ऐसी भी थी जिस में यह दिखाया गया कि अपने नगर में पहली बार आसमान में टिमटिमाते तारे साफसाफ दिखाई दे रहे थे. मानो सुंदर सफेद, चमकीले मोती टांक दिए हों. सब ने कमाल कर दिया था और बहुत ही अच्छीअच्छी फिल्में बनाईं.

मानव के पापा ने अपने दो पत्रकार मित्रों को यह बात बताई तो वे निर्णायक बनने को खुशीखुशी तैयार हो गए. अब जब सब की फिल्में आ गईं तो मानव के पापा ने मेल कर के उन को सब फिल्में भेज दीं.

सोसायटी की सब से बड़े किराने की दुकान के मालिक अंकल ने प्रतियोगिता के बारे में सुना, तो वे बोले, ''इतना सकारात्मक काम वाह, विजेताओं को इनाम मैं दूंगा अब चाहे विजेता 1 हो या 20, आप बिलकुल भी चिंता न करें.''

उन्होंने विजेताओं की फिल्में देखीं और उन के घरों में 5 किलो चीनी भिजवाई. पत्रकार मित्रों ने अखबार में सचित्र समाचार दिया. सब ने अखबार की कटिंग काट कर रख ली. अब यह जीवन भर के लिए सुरक्षित हो गया.

इस सोसायटी ने ऐसी कई औनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित कीं. सभी यादगार अनुभव थे. ●

छिपे चित्र ढूंढ़ें

2 अक्तूबर को गांधी जयंती है. नीचे चित्र में महात्मा गांधी के 10 फोटो ढूंढ़ें.

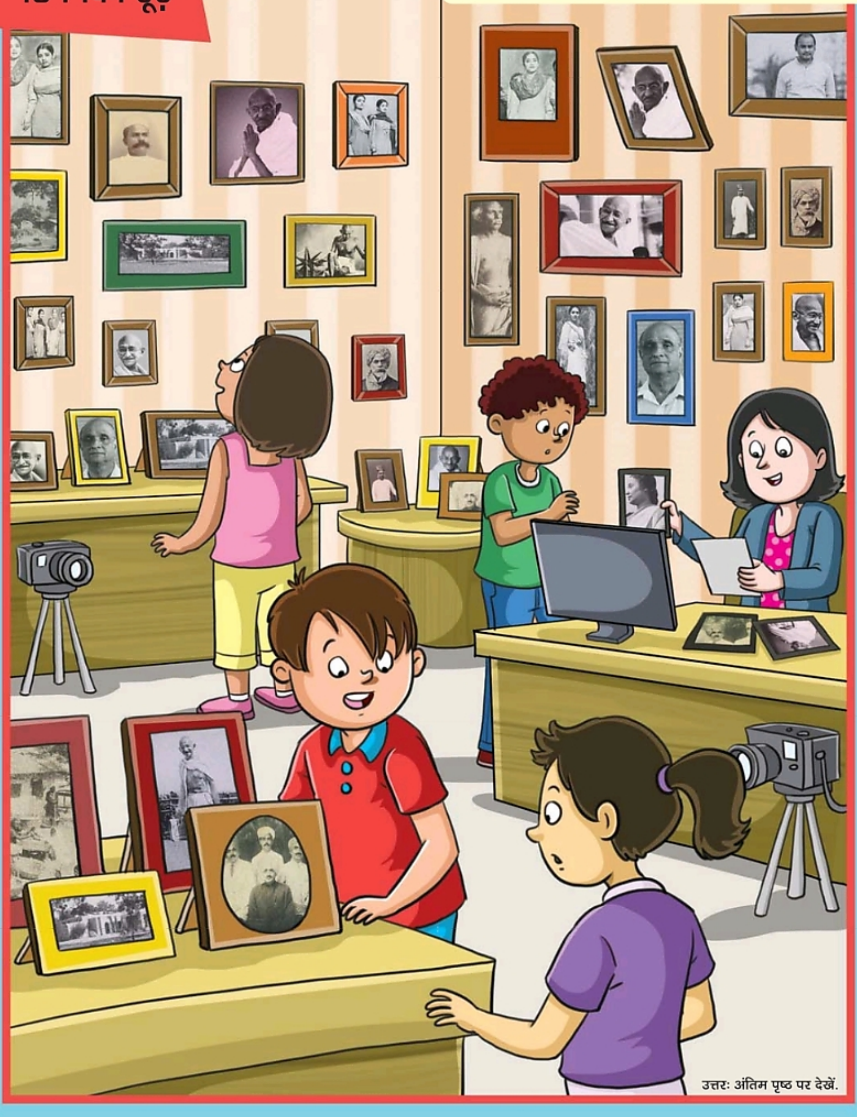

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

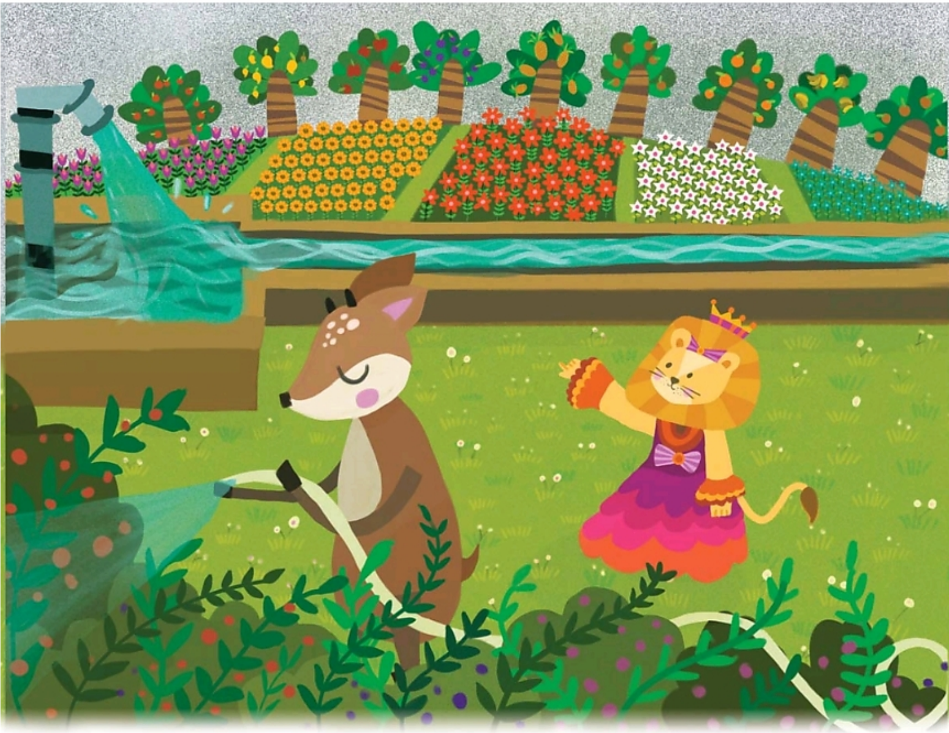

समाधान

कहानी ● वंदना गुप्ता

मधुवन के राजा शेरसिंह बहुत ही दयालु थे. हर समय वे यही सोचते थे कि ऐसा क्या करें जिस से उन की प्रजा सुखी रहे. उन्होंने अपने राज्य की भलाई के लिए नईनई योजनाएं बनाते थे.

अपने वन में पैदा होने वाले सामन का वे दूसरे वनों में निर्यात करते थे तथा वहां पैदा होने वाले सामान को अपने वन में मंगाते थे, जिस से सब को सभी चीजें उचित कीमत में मिल सकें. उस दिन भी वह ऐसे ही किसी काम से चंदनवन गए हुए थे.

शेरसिंह की बेटी राजकुमारी शायना अपने दोस्तों के साथ महल के बाहर खेल रही थी. अचानक उन की गेंद महल के बगीचे में चली गई. बगीचा बहुत बड़ा था, उस में फूलों व फलों के बहुत से पेड़पौधे थे.

शायना गेंद खोजती हुई बगीचे में गई. वहां

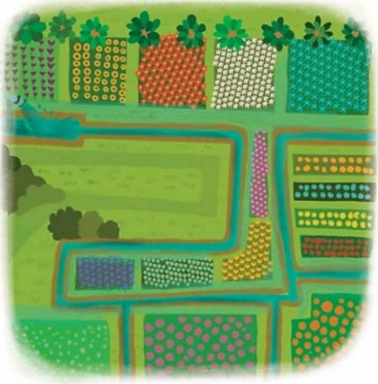

माली सप्रू हिरण अपना काम कर रहा था.

''माली चाचा, आप ने हमारी गेंद देखी क्या?'' शायना ने पूछा.

''नहीं बेटी, मैं ने तो यहां किसी गेंद को गिरते हुए नहीं देखा.''

''यह क्या चीज है, चाचा? आप ने बगीचे में इतनी सारी नालियां क्यों बना रखी हैं. यदि इन नालियों में गेंद गई होगी तो बह कर वह पता नहीं कहां चली गई होगी,'' शायना परेशान हो कर बोली.

''बेटी, यह बगीचा बहुत बड़ा है. इस के हर कोने में पानी देना तो बहुत मुश्किल है. यहां ट्यूबवेल है इसलिए मैं ने छोटीछोटी नालियां ट्यूबवेल से बगीचे के हर कोने तक बना दी हैं, अब पानी अपने आप हर तरफ चला जाएगा,'' सप्रू ने बताया.

''अरे वाह, यह तो बहुत अच्छा तरीका है चाचा,'' शायना बोली.

तभी उसे घास में अपनी गेंद दिखाई दे गई, जिसे वह घास के बीच खोज रही थी. जल्दी वह उसे ले कर वापस ग्राउंड में भाग गई.

उसी शाम जब शेरसिंह महल में वापस लौट रहे थे, तो वह किसी चीज को देख कर काफी उदास दिख रहे थे. शायना ने पूछा, ''क्या हुआ पापा, आप आज उदास क्यों हैं?''

''क्या बताऊं बेटा, चंदनवन में इस साल बहुत अधिक वर्षा हुई है, जिस से वहां नदी में बाढ़ आई हुई है. दूसरी तरफ हमारे वन में बहुत ही कम बारिश हुई है, हमारे वन की नदी लगभग सूखने की कगार पर है?''

''तो इस में क्या दिक्कत है चाचा? जहां ज्यादा पानी है, वहां से नालियां बना कर कम पानी की तरफ भेज दो. सप्रू चाचा भी तो ट्यूबवैल का पानी पूरे बगीचे में इसी तरह पहुंचाते हैं.''

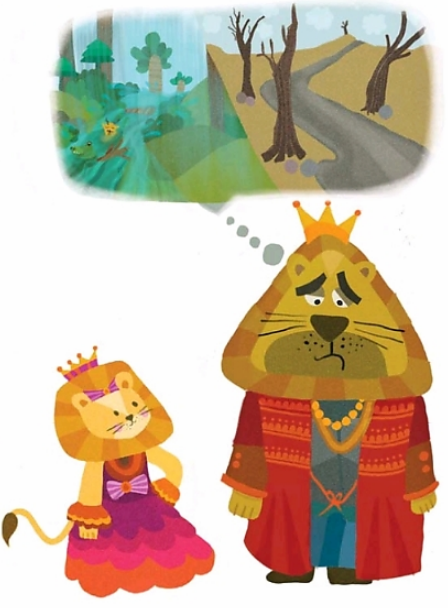

"बेटी, ये बच्चों का खेल नहीं है. तुम जा कर अपनी पढ़ाई करो," शेरसिंह ने कहा तो शायना अपने कमरे में चली गई.

शायना के जाने के बाद शेर सिंह ने सोचा, 'उन की बेटी ने तो खेल ही खेल में बहुत अच्छा तरीका बताया है. यदि बगीचे को नालियों द्वारा सींचा जा सकता है, तो वनों को नहरों द्वारा जोड़ कर सींचा जा सकता है. क्यों न अपने वन की नदी को चंदनवन की नदी के साथ नहर बना कर जोड़ दें. जहां अधिक पानी होगा वहां का पानी दूसरी नदी में छोड़ देंगे तो बाढ़ का खतरा भी नहीं रहेगा और वह पानी सूखी नदी में आ जाएगा, फिर वहां पानी की कमी नहीं रहेगी.'

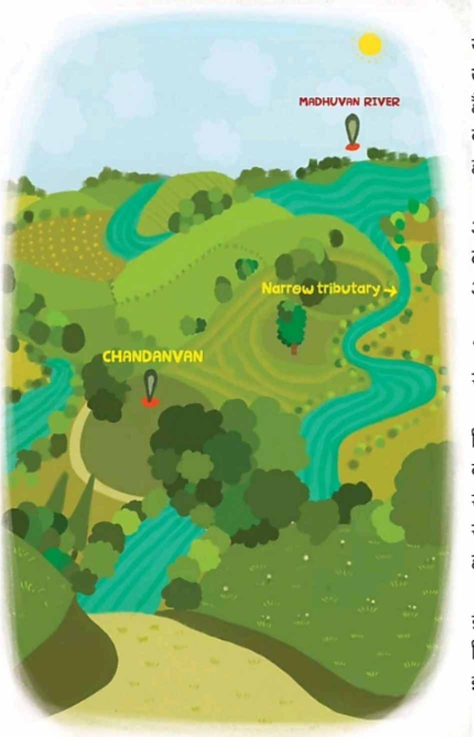

इस तरकीब को अपने दिमाग में रखते हुए, शेरसिंह ने तुरंत अपने मंत्रियों की बैठक बुलाई और इस विषय पर चर्चा की. इस आदेश को सुन ने के बाद गृहमंत्री एल्फी हाथी ने कहा, "महाराज, हमारे संबंध तो पड़ोस के सभी वनों के साथ बहुत अच्छे हैं. इसलिए चंदनवन ही नहीं, हम सभी वनों की नदियों को नहर बना कर आपस में जोड़ सकते हैं."

यह बात शेर सिंह को बहुत पसंद आई, "मंत्री जी, हमारे वन की झील भी तो सूखती जा रही है. यदि उस में भी पानी आ जाए तो हमारे वन की पानी की समस्या काफी हद तक दूर हो सकती है."

आप ने ठीक कहा महाराज, हम नदी से झील तक भी नहर बना कर उसे नदी से जोड़ देंगे और उस में भी पानी पहुंचा देंगे.

"फिर तो ठीक है, हम अपने पड़ोसी वनों के राजाओं के साथ मीटिंग करते हैं."

बिना देर किए शेरसिंह ने सभी राजाओं से बातचीत की और उन्हें अपनी योजना समझाई. वे सभी यह बात सुन कर बहुत खुश हुए और राजा का साथ देने को तैयार हो गए.

इस के बाद वनों के नक्शे तैयार किए गए, जिस में दर्शाया गया कि कहांकहां नदियां व झील हैं, उन्हें किस तरह नहरों से कनैक्ट

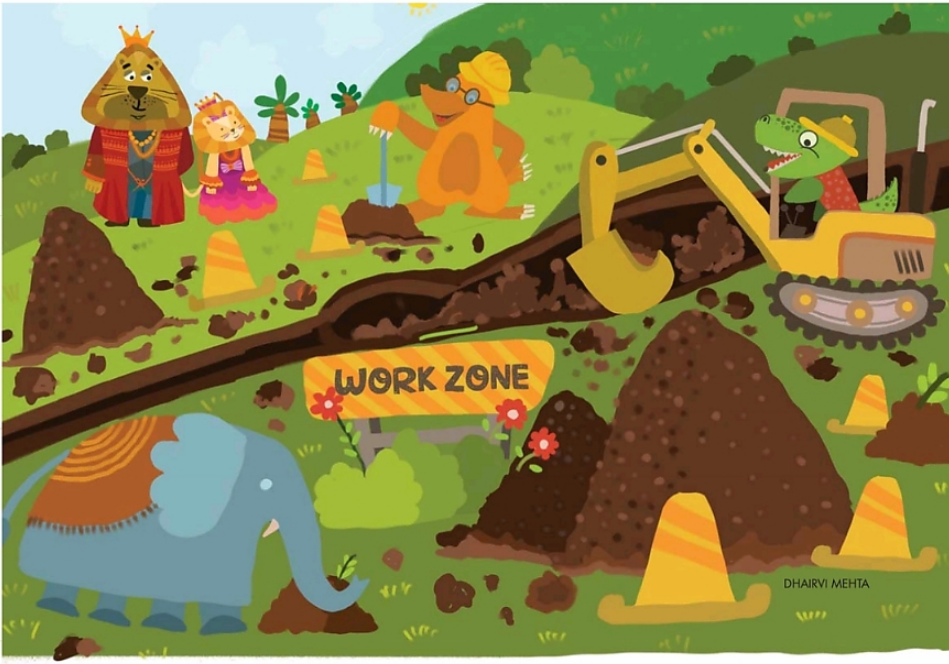

किया जा सकता है. नहरें बनाने का काम तुरंत शुरू कर दिया गया. ऐसे प्रबंध भी किए गए, जिस से बारिश का पानी बरबाद न हो, उसे इकट्ठा किया जा सके.

इस योजना में जंगल की झील की सफाई के साथसाथ उस के किनारों पर पेड़पौधे लगाना भी शामिल था. नदियों और नालों के किनारे पर भी पेड़ लगाए गए थे ताकि उन की जड़ें बारिश के पानी को रोकने में मदद कर सकें और परिणामस्वरूप अधिक बारिश हो सके.

शेरसिंह ने निर्माण स्थलों का दौरा किया और हर चीज की खुद निगरानी की, अगले मानसून सीजन तक नहरों का निर्माण पूरा करने का लक्ष्य रखा.

उन का प्रयास सफल हुआ और निर्माण का काम समय पर पूरा हुआ.

मधुवन की प्रजा बहुत खुश थी कि बाढ़, सूखा व अकाल जैसी मुसीबतों से उन्हें बहुत जल्दी छुटकारा मिलने वाला है.

शेरसिंह ने शायना की काफी प्रशंसा की, जिस ने उन्हें खेलखेल में इतना शानदार सुझाव दिया था. उस के सुझाव से न केवल उन के जंगल बल्कि सभी पड़ोसी जंगलों को इस विकराल समस्या से नजात मिलेगी. ●

कोलंबस के साथ यात्रा

क्रिस्टोफर कोलंबस जो कि एक खोजकर्ता था, भारत की तलाश में उस ने अटलांटिक सागर को पार किया था, लेकिन वह 11 अक्तूबर को भारत के बजाय अमेरिका पहुंच गया, जिसे कोलंबस दिवस के रूप में मनाया जाता है. उस के साथ जहाज पर सवार हो जाओ और उस की पहली यात्रा का अनुभव करें.

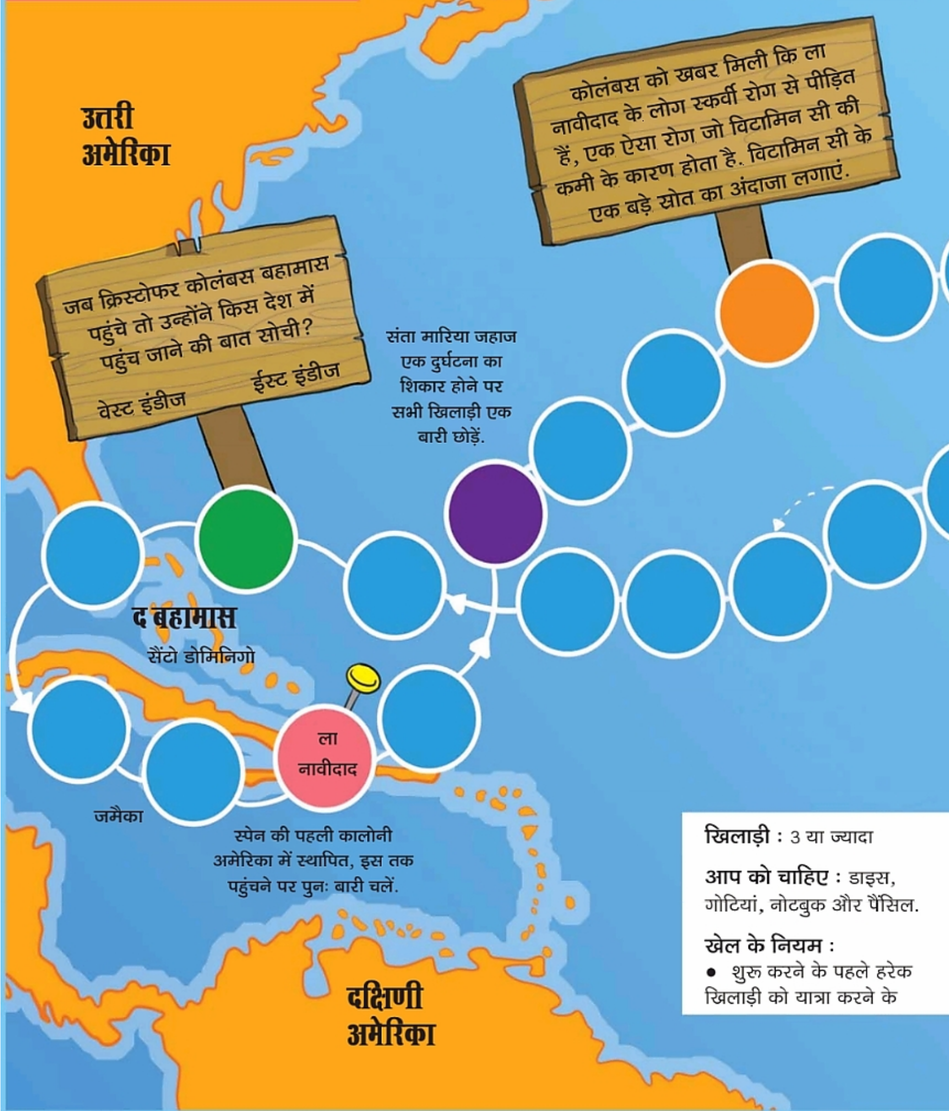

कोलंबस को खबर मिली कि ला नावीदाद के लोग स्कर्वी रोग से पीड़ित हैं, एक ऐसा रोग जो विटामिन सी की कमी के कारण होता है. विटामिन सी के एक बड़े स्रोत का अंदाजा लगाएं.

जब क्रिस्टोफर कोलंबस बहामास पहुंचे तो उन्होंने किस देश में पहुंच जाने की बात सोची?

वेस्ट इंडीज ईस्ट इंडीज

संता मारिया जहाज एक दुर्घटना का शिकार होने पर सभी खिलाड़ी एक बारी छोड़ें.

स्पेन की पहली कालोनी अमेरिका में स्थापित, इस तक पहुंचने पर पुनः बारी चलें.

खिलाड़ी : 3 या ज्यादा

आप को चाहिए : डाइस, गोटियां, नोटबुक और पैंसिल.

खेल के नियम :

- शुरू करने के पहले हरेक खिलाड़ी को यात्रा करने के

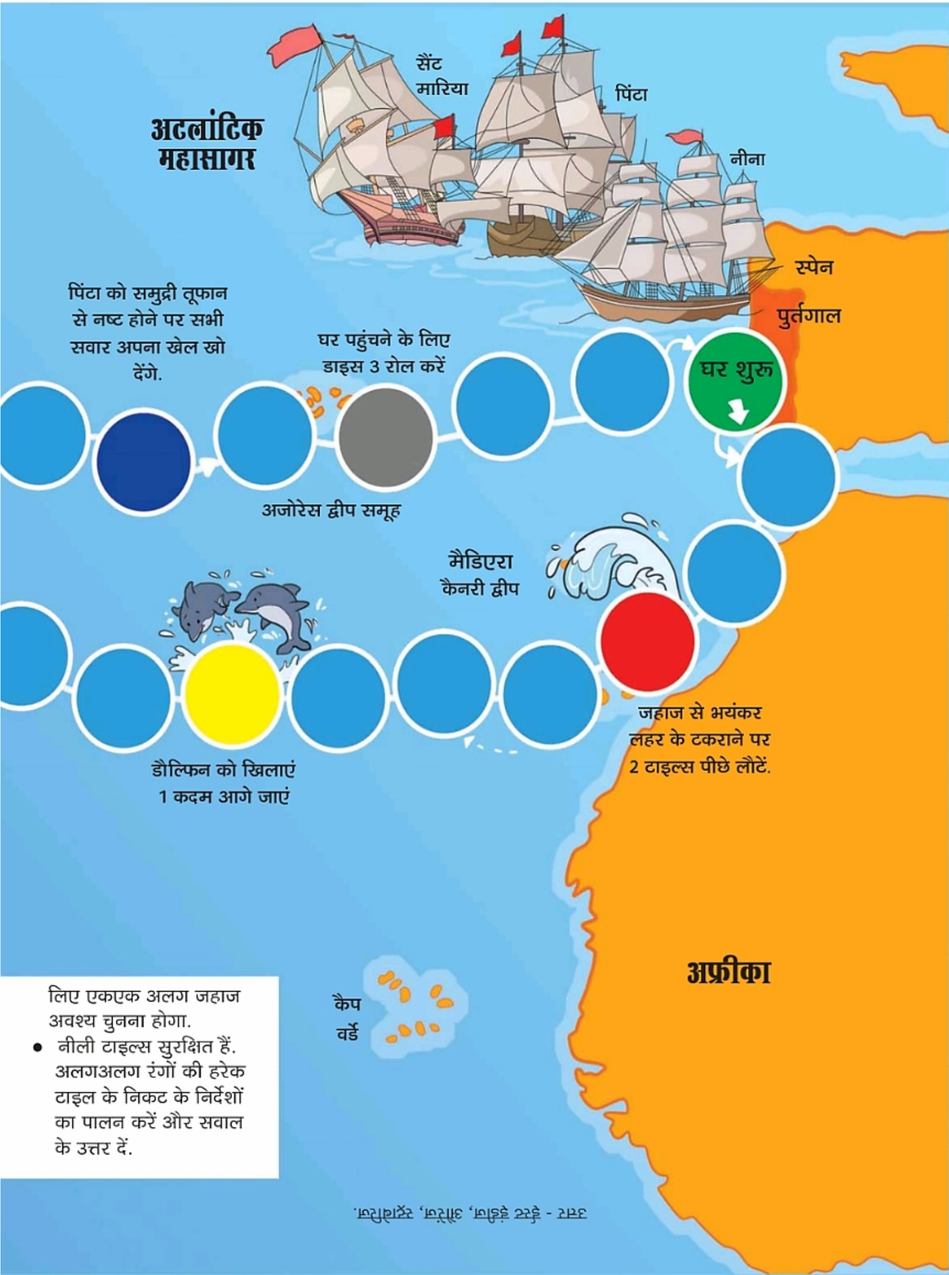
अटलांटिक महासागर
सैंट मारिया
पिंटा
नीना
स्पेन
पुर्तगाल
पिंटा को समुद्री तूफान से नष्ट होने पर सभी सवार अपना खेल खो देंगे.
घर पहुंचने के लिए डाइस 3 रोल करें
घर शुरू
अजोरेस द्वीप समूह
मैडिएरा कैनरी द्वीप
जहाज से भयंकर लहर के टकराने पर 2 टाइल्स पीछे लौटें.
डौल्फिन को खिलाएं 1 कदम आगे जाएं
अफ्रीका
कैप वर्डे

लिए एकएक अलग जहाज अवश्य चुनना होगा.

- नीली टाइल्स सुरक्षित हैं. अलगअलग रंगों की हरेक टाइल के निकट के निर्देशों का पालन करें और सवाल के उत्तर दें.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र को पूरा करें.

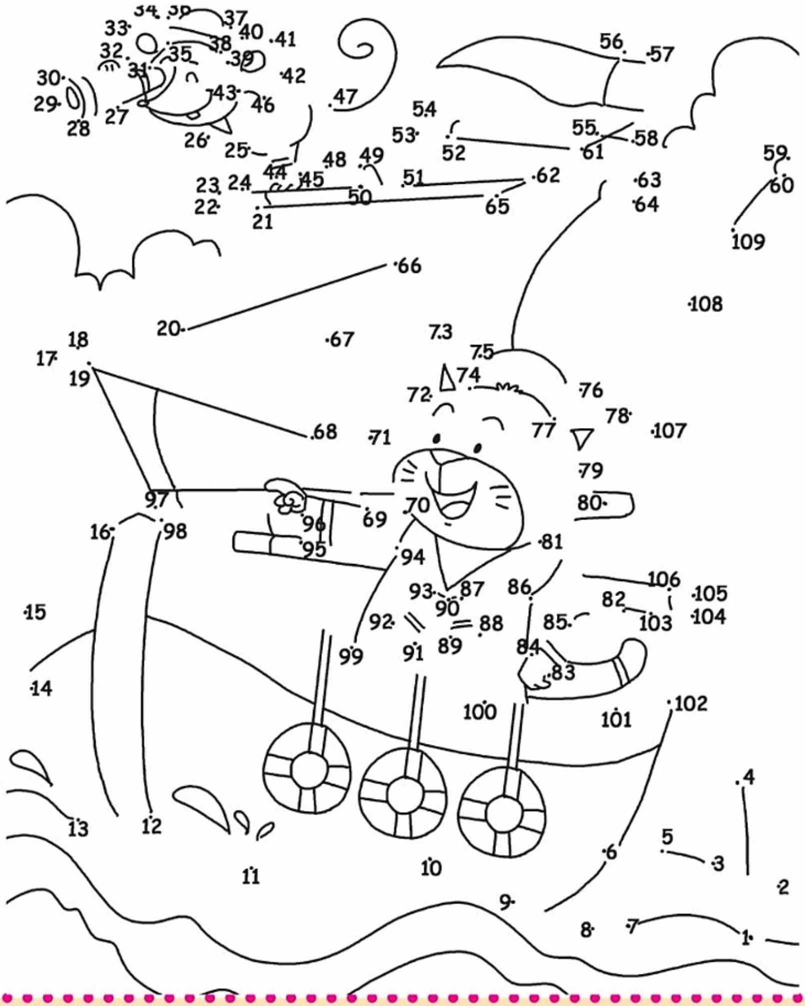
34
36
33
37
40
41
56
32
38
35
39
57
30
31
42
43
29
46
47
28
27
54
26
25
53
55
58
52
61
59
48
49
23
24
44
45
51
62
63
60
22
50
65
64
21
109
66
108
20
67
73
18
75
17
19
74
72
76
78
68
77
107
71
79
97
70
80
16
98
96
69
95
81
94
106
93
87
86
105
15
90
82
92
88
85
104
103
99
91
89
84
83
14
100
101
102
4
13
12
5
6
3
11
10
2
9
8
7
1

उड़ानहीन की तलाश में उड़ान

कहानी ● मुरली टीवी

तोता पीहू, खुशी से अपने पंख फड़फड़ाते हुए झूम उठी. पीहू दिनभर जंगलों, पहाड़ों, घाटियों और समुद्र के ऊपर उड़ती रही. पीहू को उड़ना पसंद था.

'अरे, यहां तो पहले से ही अंधेरा है,' पीहू बड़बड़ाई, ''मुझे तुरंत उतर जाना चाहिए,'' पीहू तेजी से नीचे उतरी, ''मुझे सूर्यास्त से पहले ही कहीं उतर जाना चाहिए,'' पीहू ने खेद जताते हुए कहा. जब वह जमीन के निकट आई तो वह घास के मैदान को देख सकती थी. किसी तरह पीहू घास पर उतरने में कामयाब रही और उस ने राहत की सांस ली.

''काफी लंबी यात्रा की,'' पीहू ने कुछ देर तक अपने शरीर को फैलाते हुए कहा.

''तुम कौन हो?'' अचानक एक अजीब सी आवाज ने उसे डरा दिया. पीहू ने चारों ओर शंका से देखा और फुसफसाई, ''मैं पीहू हूं, दूर चमचम वन में रहती हूं.''

अचानक एक बड़ी चिड़िया पीहू के पास आ गई. उस ने इस से पहले इतनी बड़ी चिड़िया कभी नहीं देखी थी. ''मैं कोको काकापो हूं,'' पक्षी ने अपना परिचय पीहू को दिया. ''ऐसा लगता है, तुम उड़ते हुए थक गई हो, अफसोस मैं नहीं उड़ सकता.''

पीहू बोली, ''ओह, तुम तो बहुत मिलनसार हो. मैं ने तो सोचा था कि तुम अपनी जमीन पर उतरने के कारण मुझ पर हमला करोगे.'' कोको मुसकराया.

अचानक कोको हंस पड़ा, ''अरे, मैं भी तोता हूं.'' यह सुन कर पीहू भी अपनी हंसी रोक नहीं पाई. ''देखो, कोको, तुम मुझे बुद्धू मत बनाओ. तुम तोता कैसे हो सकते हो?'' तुम तो एक काकापो हो.

''मेरा नाम कोको है. मैं एक काकापो हूं, जिसे उल्लू तोता भी कहते हैं,'' कोको ने पीहू को विस्तार से बताया. ''मैं एक बड़ा, उड़ानहीन, निशाचर यानी रात में चलने वाला और जमीन पर रहने वाले तोतों की प्रजाति से हूं. क्या तुम जानते हो कि मैं विश्व का एकमात्र उड़ानहीन यानी न उड़ने वाला तोता हूं?''

''अविश्वसनीय,'' पीहू हैरानी से बोली. कोको अपने पतले धब्बेदार पीलेहरे पंख के साथ सुंदर दिख रही थी. एक अलग से चेहरे का फेशियल, बड़ी भूरी चोंच, छोटे पैर, बड़े पैर और छोटे पंखों और पूंछ के साथ खूबसूरत लग रही थी. कोको ने पीहू को खाना खाने को दिया. कुछ देर बाद पीहू सो गई, अगली सुबह जब वह उठी, वह जानती थी कि वह रात में उड़ने वाला पक्षी है तो कोको रात में जागेगी और दिन में सोएगी. कोको कहीं नहीं दिखाई दे रही थी.

पीहू फिर से उड़ान भरने लगी. उस ने उत्साह से अपने पंख फड़फड़ाए और नीचे के नजारों को

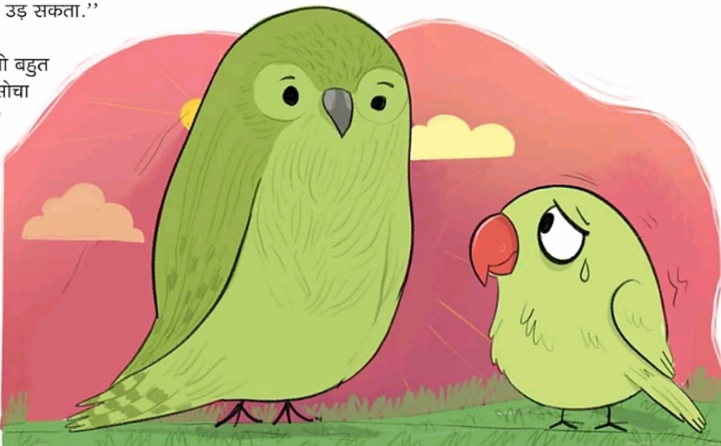

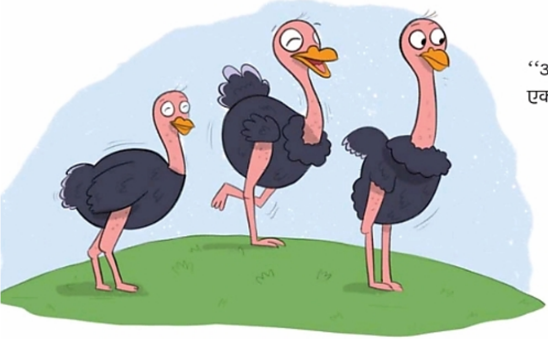

बदलते हुए देखने के मजे लेने लगी, ‘‘अरे, वे कौन हैं?’’ पीहू हैरान हो गई, जब उस ने नीचे कुछ बड़े पक्षियों को देखा और वह उन्हें नजदीक से देखने के लिए नीचे उड़ गई.

पीहू के फड़फड़ाने की आवाज सुन कर बड़े पक्षियों ने ऊपर की ओर देखा. ‘‘हमारी जमीन पर तुम्हारा स्वागत है,’’ उन में से एक ने कहा. पीहू खुश हो कर लकड़ी के एक लट्ठे पर बैठ गई और उस ने सभी को हैलो किया.

‘‘मैं औस्ट्रो औस्ट्रिच हूं,’’ एक बड़े शुतुरमुर्ग ने अपना परिचय दिया. ‘‘मैं जानता हूं कि तुम तोता हो और ऐसा लग रहा है कि तुम हमारी जमीन तक आने के लिए मीलों की उड़ान भर कर आ रही हो.’’

पीहू खुशी से झूमते हुए बोली, ‘‘हां, तुम बिलकुल सही कह रहे हो. मैं कल से उड़ रही हूं.’’ एक पल रुकने के बाद पीहू ने उत्सुकता से इन नए पक्षियों को देखा. पीहू के मन में क्या चल रहा था, इसे भांपते हुए औस्ट्रो मुसकराया और बोला, ‘‘चिंता मत करो, मेरी दोस्त. तुम दुनिया के सब से बड़े पक्षी को देख रही हो. मैं औस्ट्रिच हूं. हालांकि मैं पक्षी हूं, फिर भी उड़ नहीं सकता हूं. मैं 55 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से काफी समय तक दौड़ सकता हूं और यही नहीं मैं 70 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से थोड़े समय के लिए दौड़ भी सकता हूं. इस तरह यह जमीन पर चलने की किसी पक्षी की सब से तेज गति है.’’

‘‘ओह, मैं ने तो सोचा था कि पक्षी होने का सिर्फ एक ही मतलब होता है उड़ना, लेकिन अब मैं एक सब से तेज दौड़ने वाले पक्षी को भी देख रही हूं,’’ पीहू ने आश्चर्य जताया. ‘‘तुम्हारे पैर मजबूत हैं,’’ पीहू ने औस्ट्रो से कहा.

‘‘हां, जरूर. हमारे पैर काफी मजबूत हैं अगर कोई खतरा हो तो हम आमतौर पर जमीन पर सपाट लेट कर छिपने की कोशिश करते हैं या भाग जाते हैं. लेकिन यदि हम घेर लिए जाते हैं तो तब हम अपने शक्तिशाली पैरों से जोरदार हमला कर लातों की बारिश करते हैं,’’ औस्ट्रो ने बताया, ‘‘क्या तुम जानती हो कि हमारे अंडे किसी भी जीवित पक्षी के सब से बड़े अंडे हैं?’’

गहरे भूरे सिर और गरदन वाले अन्य ब्राउनिश यानी भूरे रंग के पक्षियों को घूरते हुए पीहू ने औस्ट्रो से पूछा, ‘‘तुम्हारे बगल में खड़े उस पक्षी को क्या कहते हैं जो थोड़ा बहुत तुम्हारे जैसा लगता है?’’

‘‘ओह, वह औस्ट्रिच नहीं बल्कि एक ऐमु यानी किवि है. उस का नाम ऐमी है,’’ औस्ट्रो ने जवाब दिया. ऐमि ने पीहू को हैलो किया, ‘‘मैं अपने रैटाइट

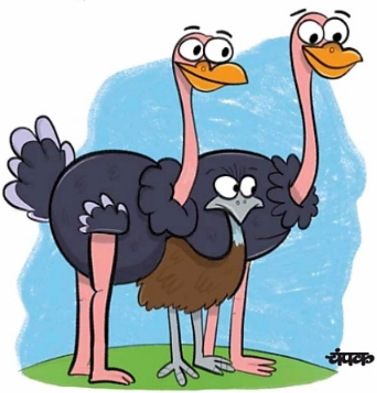

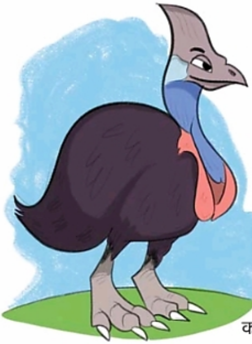

रिश्तेदार, शुतुरमुर्ग के बाद ऊंचाई के हिसाब से दूसरा सब से बड़ा जीवित पक्षी हूं.''

''रैटाइट का क्या मतलब है?'' अचानक पीहू ने पूछा.

''ओह, रैटाइट मतलब उड़ानहीन. हम पक्षियों की उस प्रजाति से संबंधित हैं जो उड़ नहीं सकती है.''

औस्ट्रो, ऐमु और उस के दोस्तों ने पीहू को कुछ खाने के लिए दिया, पीहू ने उन की कंपनी का खूब आनंद लिया. पीहू औस्ट्रो पर बैठ गई, जो उसे घास के मैदान में तेजी से दौड़ाने के लिए ले गया. ''अमेजिंग, अमेजिंग,'' पीहू खुशी से चीखने लगी.

अचानक एक बड़ा पक्षी वहां आ गया, ''स्वागत है, कैसो,'' औस्ट्रो ने मेहमान का स्वागत किया और पीहू नए मेहमान को हैरानी से देखने लगी. औस्ट्रो ने पीहू का परिचय कैसो से कराया.

''मैं कैसो हूं, कैसोवरी. औस्ट्रो की तरह मैं भी उड़ नहीं सकता,'' कैसो ने पीहू को अपना परिचय दिया. पीहू ने मुसकराते हुए कहा, ''मैं बहुत लकी हूं कि आज मुझे बहुत से उड़ानहीन पक्षी मिल गए हैं.''

कैसो ने कहा, ''मैं भी रैटाइट हूं. क्या तुम जानती हो कि मैं तीसरा सब से बड़ा और दूसरा सब से भारी पक्षी हूं.''

ऐमी ने हस्तक्षेप किया, ''सावधान, पीहू. क्या तुम्हें पता है कि कैसोवरीज को दुनिया का सब से खतरनाक पक्षी माना जाता है.''

यह सुनते ही पीहू की हंसी गायब हो गई और वह औस्ट्रो के पीछे छिप गई. औस्ट्रो ने पीहू को उठाया और मुसकराते हुए कहा, ''वह तुम पर हमला नहीं करेगा. आमतौर पर कैसोवरीज इंसानों और अन्य दूसरे जानवरों से बहुत सावधान रहते हैं, लेकिन यदि उन्हें तंग या उकसाया गया तो वे गंभीर हो जाते हैं, कभीकभी वे हमलावर को घातक चोट भी पहुंचा सकते हैं.''

''खतरनाक दोस्त,'' कैसो हंसा जिस से पीहू आराम महसूस कर सके. कैसो ने पीहू को ढेर सारे फल और मेवे खाने को दिए. ''आप सभी का बहुतबहुत धन्यवाद, लेकिन अब समय हो गया है कि मैं अपनी आगे की उड़ान जारी रखूं,'' पीहू ने उन सभी को बाय कहा. कुछ घंटे बाद पीहू थोड़ा आराम करने के लिए नीचे उतर गई.

'मैं सोच भी नहीं सकती थी कि एक पक्षी इतना बड़ा होगा कि वह उड़ नहीं पाता है,' पीहू ने खुद से बहुत तेज आवाज में कहा.

''उस छोटे से तोते जैसा कुछ भी नहीं है,'' उस ने अचानक दो पक्षियों की आवाज सुनी. पीहू हैरानी से पीछे मुड़ी और देखा कि कोई उस का पीछा कर रहा है.

''मैं विन्नी हूं, वेका,'' हल्के भूरे और काली धारीदार पंखों वाला एक मुर्गी के आकार का पक्षी बोला. उस की मजबूत पतली चोंच, डायनासौर की तरह मजबूत पैर और मनके की तरह लाल आखें थीं. वह पीहू के पास आया.

''मुझे उम्मीद है कि तुम एक फ्लायर यानी उड़ने वाली चिड़या हो,'' पीहू ने उस से कहा.

''नहीं, मैं उड़ नहीं सकती,'' अपनी मजबूत चोंच हिलाते हुए विन्नी ने जवाब दिया. पीहू को इस बात पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ. ''मेरी सहेली टीना टाकाहे भी उड़ नहीं सकती,'' विन्नी ने पीहू से कहा और अपनी सहेली टीना की ओर इशारा किया. टीना टाकाहे चमकीले नीले और तांबे के रंग वाले पंखों के

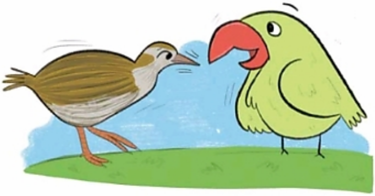

साथ बहुत सुंदर दिख रही थी. उस के माथे पर एक बड़ा लाल बिल बना हुआ था.

''मेरे पंखों को देखो, ये तुम्हारे पंखों की तरह ही छोटे हैं. फिर भी मैं उड़ सकती हूं,'' पीहू ने कहा. टीना ने अपने पंख फड़फड़ाए और बताया, ''हम अपने पंखों का इस्तेमाल प्रदर्शन करने के लिए या आक्रामकता दिखाने के लिए करते हैं, लेकिन हम उड़ नहीं सकते हैं,'' पीहू ने सिर हिलाया.

पीहू ने टीना और विन्नी के साथ कुछ समय बिताया और अपने अनुभव को साझा किया. सूरज डूब गया और अब धीरेधीरे अंधेरा छा रहा था. विन्नी और टीकू वहां से गायब हो गए. पीहू ने अंधेरेपन को टकटकी लगा कर देखा, ''आज रात आसमान में एक भी तारा टिमटिमाता नहीं दिख रहा है,'' पीहू ने अपने पंख फड़फड़ाए, मानो उसे अपने प्यारे चांद और सितारों की याद आ रही हो.

''तुम चैन से चुपचाप क्यों नहीं सो सकती पीहू?'' मम्मी ने अचानक पीहू से पूछा, ''क्या तुम सोते समय उड़ना बंद नहीं कर सकती हो?''

हैरानपरेशान नन्ही खूबसूरत पीहू ने अपनी पलकों को झपकाया और बोली, ''मां, तुम यहां कब आईं? मैं तो विन्नी और टीना के साथ थी.''

पीहू की मां पिया हंसते हुए बोलीं, ''अपने सपने से वापस हकीकत में लौटो, मेरी नन्ही बच्ची,'' पिया ने पीहू का मन बहलाते हुए हिलाया. पीहू ने अपनी उड़ान के बारे में मां को विस्तार से बताया कि कैसे उस की भेंट उड़ानहीन यानी न उड़ने वाले पक्षियों से हुई. उस ने पिया को कोको, औस्ट्रो, ऐमी, कैसो, विन्नी और टीना की खासियतों के बारे में बताया. पिया ने उत्सुकता से पीहू को सुना.

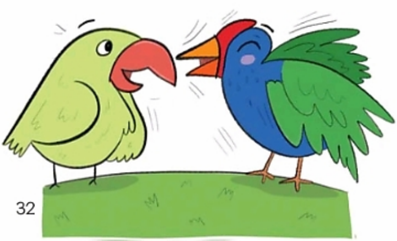

''लेकिन बहुत अच्छा पिंकी, तुम ने पैंगुइन को छोड़ दिया?''

पैंगुइन भी एक उड़ानहीन पक्षी है, लेकिन यह जलीय पक्षी है यानी पानी में रहने वाला ये तैर सकते हैं.''

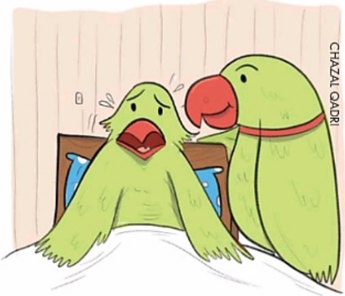

CHAZAL QADRI

''मुझे सो जाना चाहिए, हो सकता है, मैं पैंगुइन से भी मिल जाऊं,'' पीहू हंसते हुए बोली.

''बहुत अच्छे, अब जल्दी से उठो तुम्हें स्कूल जाना है और हो सकता है कि आज रात पैंगुइन तुम्हारे सपने में आ जाए.''

ध्यान रहे, कल सोने से पहले स्वेटर, ऊनी ग्लब्स, ऊनी मंकीकैप और ऊनी जुराबें पहनना मत भूलना. किस को पता है कि तुम कब अचानक अंटार्कटिका में कुछ पैंगुइनों के बीच में उतर जाओगी,'' मां ने कहा.

पीहू हंस कर उठी और उड़ानहीन पक्षियों को खोजने के लिए काफी खुश थी. ●

एल्मो की मदद करें

8 अक्तूबर को विश्व अंडा दिवस है. एल्मो अंडा टहलने गया था और उसे बास्केट यानी टोकरी तक पहुंचना है. यहां पर 4 रास्ते हैं और प्रत्येक टाइल पर कदमों की संख्या लिखी हुई है जिन पर एल्मो को कदम बढ़ाने यानी चलना है. सब से छोटे रास्ते पर चलने के लिए उस की सहायता करें.

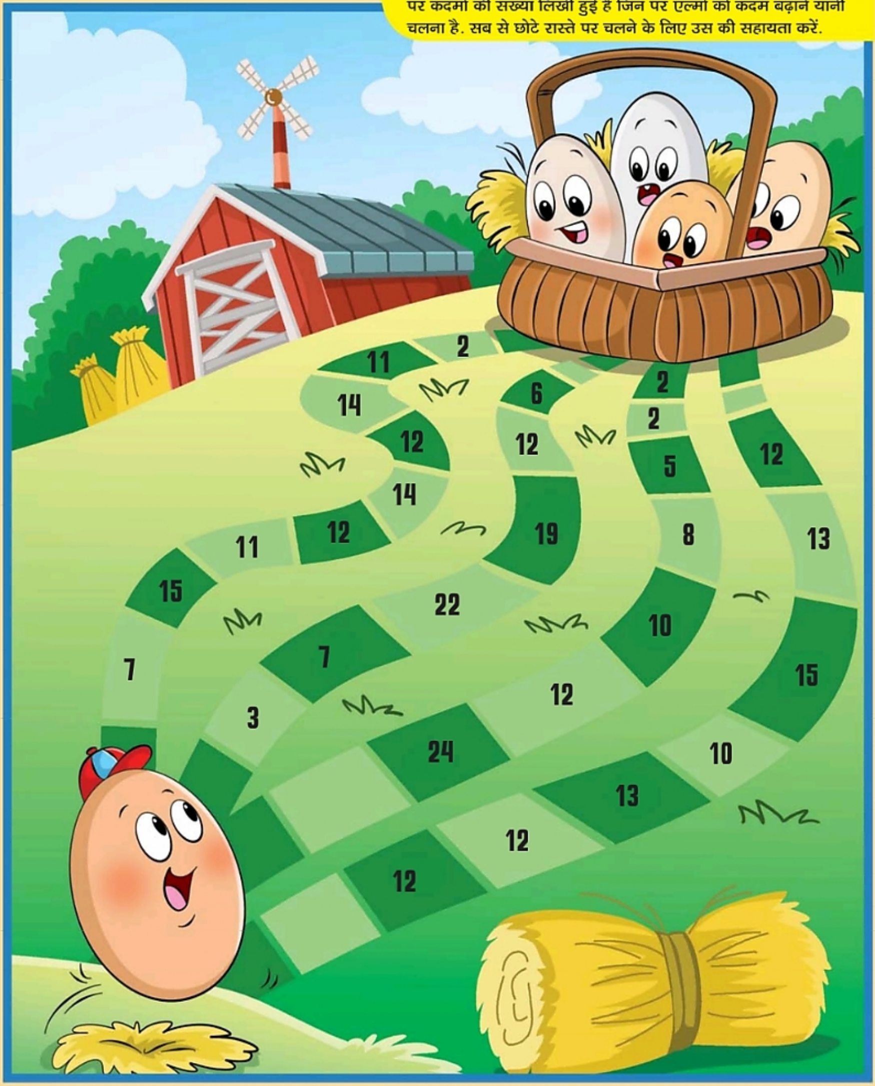
2
11
14
6
2
2
12
12
5
12
14
12
11
19
8
13
15
22
10
7
7
15
12
3
24
10
13
12
12

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

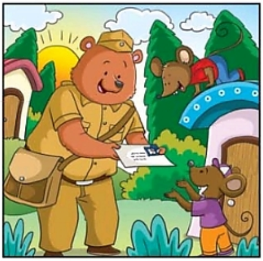

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें

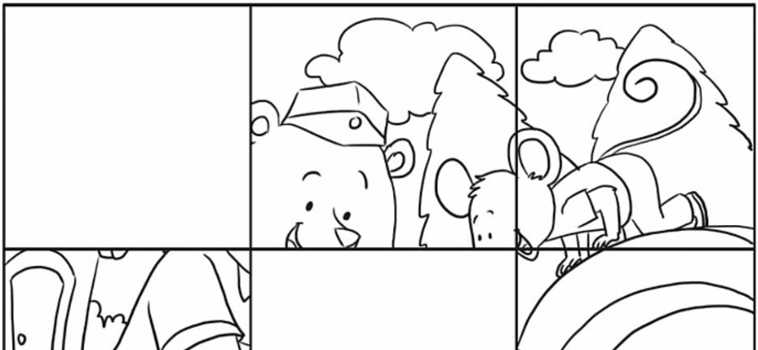

पेपर टर्टल

द्वारा - देविका मेनन

एक प्लेट और रंगीन पेपरशीट्स के इस्तेमाल से आइए, एक टर्टल यानी कछुआ बनाते हैं.

आप को चाहिए : डिस्पोजेबल प्लेट, रंगीन पेपरशीट्स, कैंची, ग्लू.

ऐसे बनाएं :

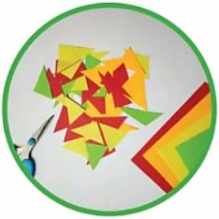

1. रंगीन पेपरशीट्स का इस्तेमाल करते हुए अलगअलग आकार और साइज के त्रिभुज यानी ट्राइऐंगल काट लें.

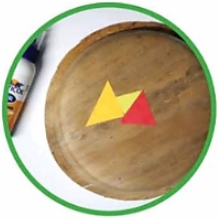

2. प्लेट को उल्टा कर के रखें और इस के ऊपर ट्राइऐंगलों को चिपका दें जैसा चित्र में है.

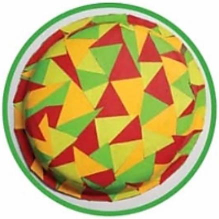

3. प्लेट की सतह को ढक दें.

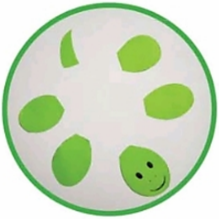

4. जैसा चित्र में दिखाया गया है, आकार काट लें. टर्टल यानी कछुए को पूर्ण करने के लिए उन्हें प्लेट पर चिपका दें.

अब आप का पेपर टर्टल बन कर तैयार है.

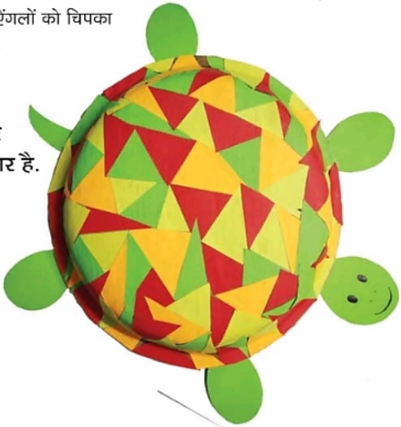

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

चीकू

चित्रकथा : दास

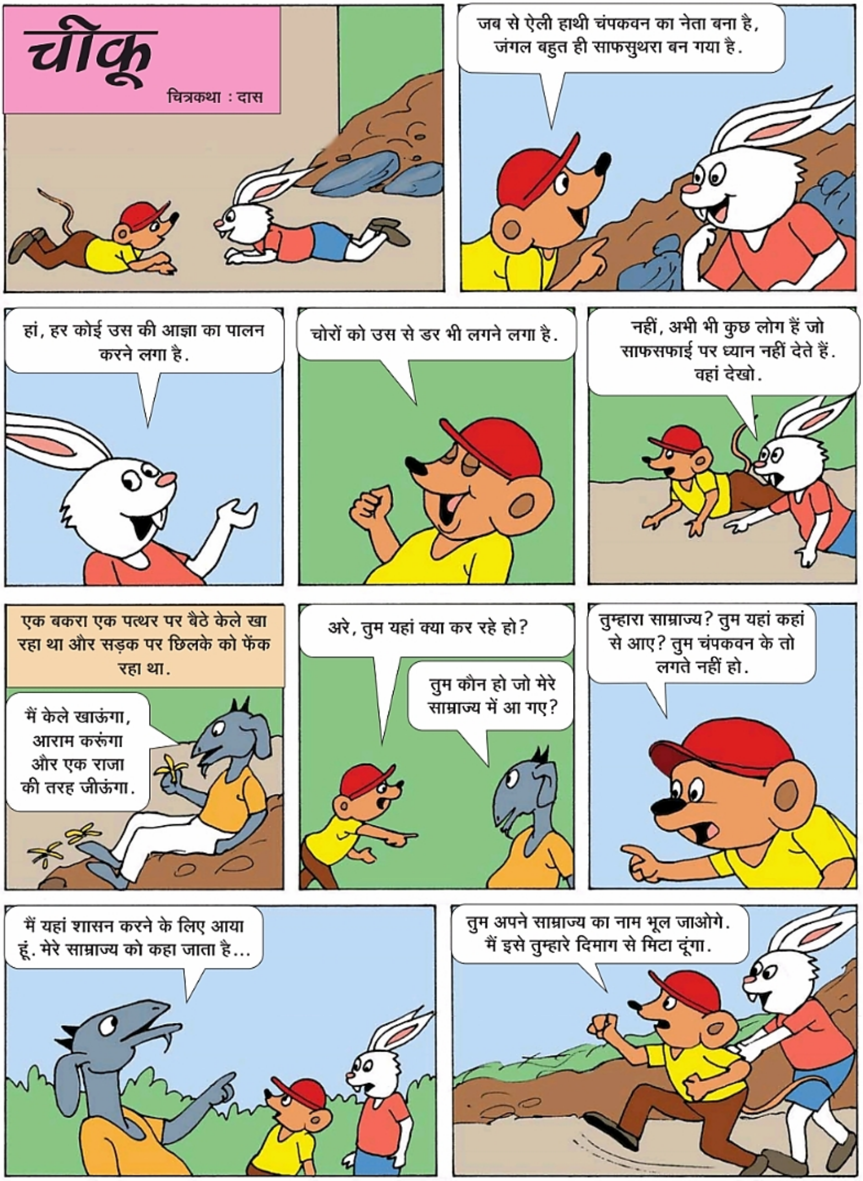
जब से ऐली हाथी चंपकवन का नेता बना है, जंगल बहुत ही साफसुथरा बन गया है.
हां, हर कोई उस की आज्ञा का पालन करने लगा है.
चोरों को उस से डर भी लगने लगा है.
नहीं, अभी भी कुछ लोग हैं जो साफसफाई पर ध्यान नहीं देते हैं. वहां देखो.
एक बकरा एक पत्थर पर बैठे केले खा रहा था और सड़क पर छिलके को फेंक रहा था.
मैं केले खाऊंगा, आराम करूंगा और एक राजा की तरह जीऊंगा.
अरे, तुम यहां क्या कर रहे हो?
तुम कौन हो जो मेरे साम्राज्य में आ गए?
तुम्हारा साम्राज्य? तुम यहां कहां से आए? तुम चंपकवन के तो लगते नहीं हो.
मैं यहां शासन करने के लिए आया हूं. मेरे साम्राज्य को कहा जाता है...
तुम अपने साम्राज्य का नाम भूल जाओगे. मैं इसे तुम्हारे दिमाग से मिटा दूंगा.

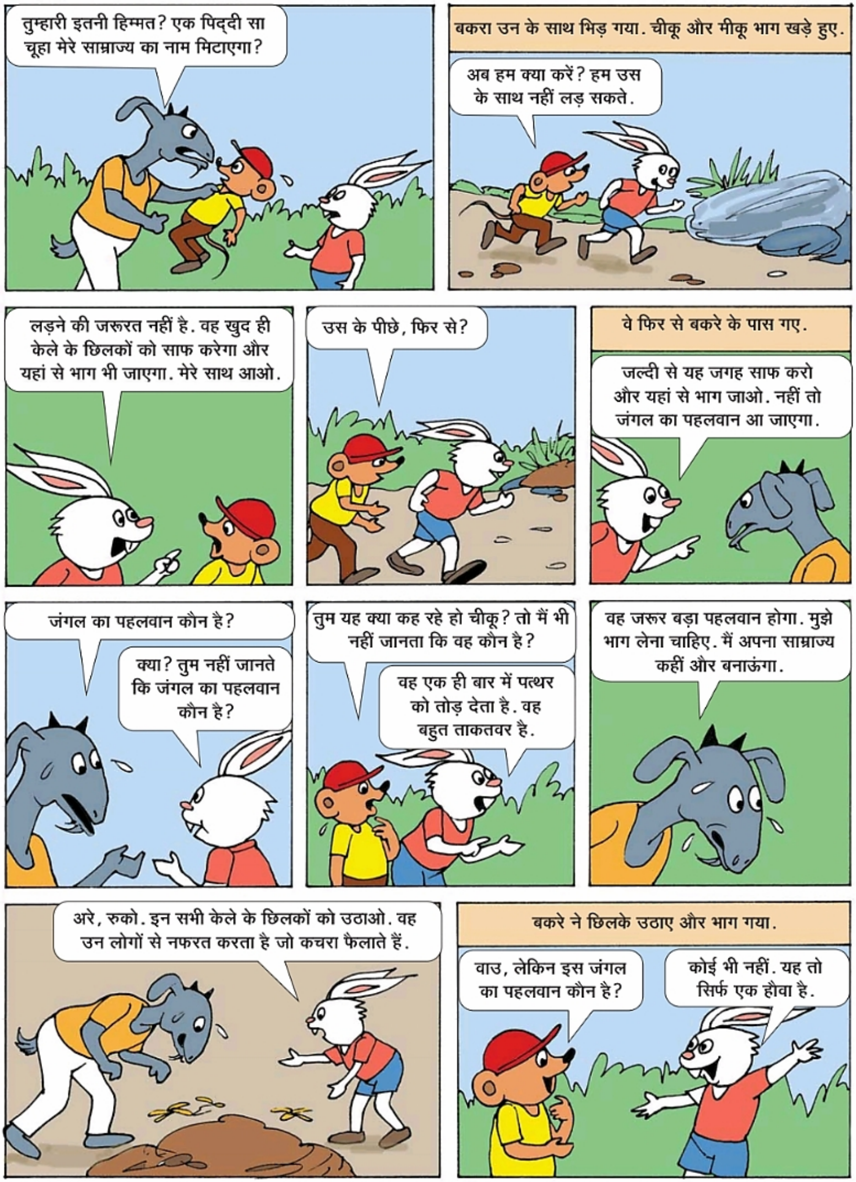
तुम्हारी इतनी हिम्मत? एक पिद्दी सा चूहा मेरे साम्राज्य का नाम मिटाएगा?
बकरा उन के साथ भिड़ गया. चीकू और मीकू भाग खड़े हुए.
अब हम क्या करें? हम उस के साथ नहीं लड़ सकते.
लड़ने की जरूरत नहीं है. वह खुद ही केले के छिलकों को साफ करेगा और यहां से भाग भी जाएगा. मेरे साथ आओ.
उस के पीछे, फिर से?
वे फिर से बकरे के पास गए.
जल्दी से यह जगह साफ करो और यहां से भाग जाओ. नहीं तो जंगल का पहलवान आ जाएगा.
जंगल का पहलवान कौन है?
क्या? तुम नहीं जानते कि जंगल का पहलवान कौन है?
तुम यह क्या कह रहे हो चीकू? तो मैं भी नहीं जानता कि वह कौन है?
वह एक ही बार में पत्थर को तोड़ देता है. वह बहुत ताकतवर है.
वह जरूर बड़ा पहलवान होगा. मुझे भाग लेना चाहिए. मैं अपना साम्राज्य कहीं और बनाऊंगा.
अरे, रुको. इन सभी केले के छिलकों को उठाओ. वह उन लोगों से नफरत करता है जो कचरा फैलाते हैं.
बकरे ने छिलके उठाए और भाग गया.
वाउ, लेकिन इस जंगल का पहलवान कौन है?
कोई भी नहीं. यह तो सिर्फ एक हौवा है.

पक्षी की मदद करें

9 अक्तूबर को विश्व प्रवासी पक्षी दिवस है. एक प्रवासी पीली वैगटेल पेड़ की चोटी पर उतरना चाहती है. उस तीर को गोल करें जो पक्षी को दिशा दिखाता है, जिधर पक्षी को पेड़ पर उतरने के लिए उड़ना होगा.

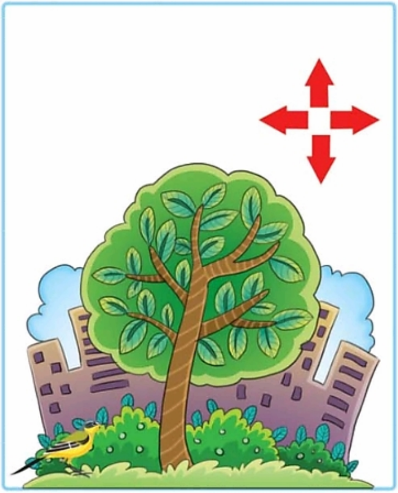

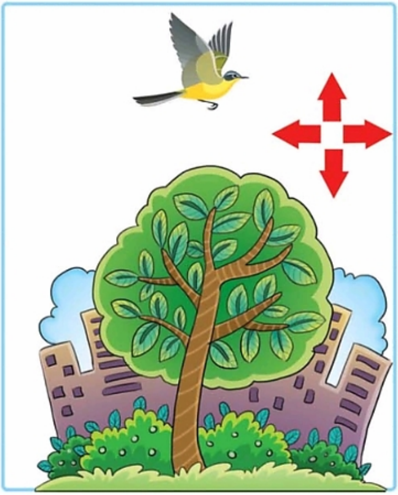

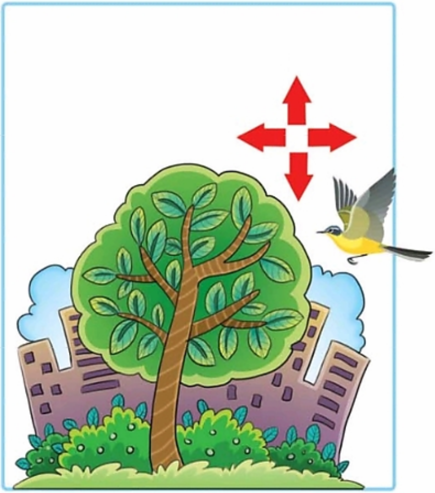

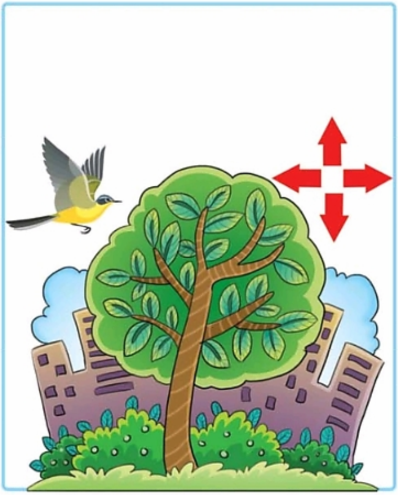

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

आप के सवाल मेनका आंटी के जवाब

मेनका आंटी पशुपक्षियों से बहुत प्यार करती हैं. अब आप के सवालों का जवाब मेनका आंटी देंगी. जैसे पशुपक्षियों को खाना कैसे खिलाएं, उन से कैसे प्यार करें, कैसे उन की देखभाल करें आदि. वे एक सांसद तो हैं ही, कुशल पर्यावरणविद् भी हैं.

जानवर हमारी धरती के निवासी हैं, जितना कि हम हैं. हम उन का शिकार न कर या उन के अंगों का इस्तेमाल न कर उन का सम्मान करते हैं, तो हम अपने ग्रह और प्रकृति के प्रति सम्मान दर्शाते हैं. जिन पशुओं तथा जानवरों को हम पालतू जानवर के रूप में रखते हैं, वे पूरी तरह से हम पर निर्भर रहते हैं और उन्हें वैसे ही प्यार और सम्मान देना चाहिए जैसे हम अपने भाईबहनों को देते हैं. पक्षियों और मछलियों को पालतू जानवर के रूप में न रखें, उन्हें पिंजरे में कैद करना और दयनीय बनाना अच्छा नहीं है.

मेनका संजय गांधी

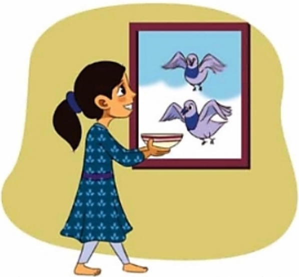

बहुत से कबूतर हमारी बालकनी में आते हैं और पौधों की पत्तियों को तोड़ देते हैं. मैं इन से कैसे छुटकारा पा सकता हूं?

भव्यनाथ चिन्नी, 12 वर्ष, हैदराबाद

वे भूखे होते हैं. आप उन के लिए बाहर चारा खाने के लिए रख दे सकते हैं. अनाज के दाने, गेहूं, मक्का, मटर या कुछ फल रख सकते हैं जो इन के लिए बढ़िया विकल्प होगा. वे आप के पौधों को अकेला छोड़ देंगे और एक बढ़िया काम करने पर आप को संतुष्टि मिलेगी. मानवीय स्नेह से ज्यादा और कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है. चिड़ियों को खाना खिलाने से ज्यादा और ऐसा कुछ भी नहीं है जो आत्मा को खुश करता हो.

मनुष्य जानवरों को उन की खाल के लिए क्यों मारते हैं?

वैदेही सिंघानिया, 10 वर्ष, दिल्ली

क्योंकि ज्यादातर लोगों को इस बात का एहसास ही नहीं होता है खाल के लिए जानवर को मारा गया है. कुछ लोग लेदर यानी खाल पहनते हैं. इस के लिए कितने जानवरों बच्चे यानी शावक और उन की माताओं को मारा गया है? हम में से हरेक को जीने की चाहत है. उन चीजों का इस्तेमाल न करें जो प्राणियों को नुकसान पहुंचा कर बनाए गए हों.

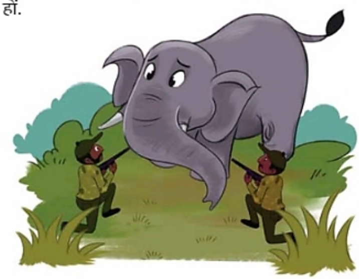

ONKAR MAHAMUNI

यदि आप पालतू जानवरों, पशुपक्षियों के बारे में कुछ भी पूछना चाहें, तो अपने प्रश्न हमें भेजें, मेनका आंटी हर प्रश्न का जवाब देंगी.

✉ **writetochampak@delhipress.in**

8657402248

मेहनत रंग लाई

कहानी ● डा.के. रानी

9 वर्षीय आयशा अपने मम्मीपापा के साथ उत्तराखंड के सुदूर एक छोटे से पहाड़ी जिले में रहती थी. आयशा के पापा गांव की प्राथमिक पाठशाला में शिक्षक थे. गांव वाले प्यार से उन्हें मास्टरजी कह कर बुलाते थे. उन का गांव में बहुत सम्मान था.

पाठशाला में आसपास के गांव के बच्चे भी पढ़ने आते थे. आयशा का गांव मुख्य सड़क से कुछ ही दूरी पर था. सरकार ने इस बार गांव को मुख्य सड़क से जोड़ने का काम शुरू कर दिया था. स्थानीय ठेकेदार की देखरेख में कुछ नेपाली मूल के मजदूर सड़क निर्माण के लिए पहाड़ काटने का काम कर रहे थे.

वे इस जगह पहली बार आए थे. इसी वजह से वे

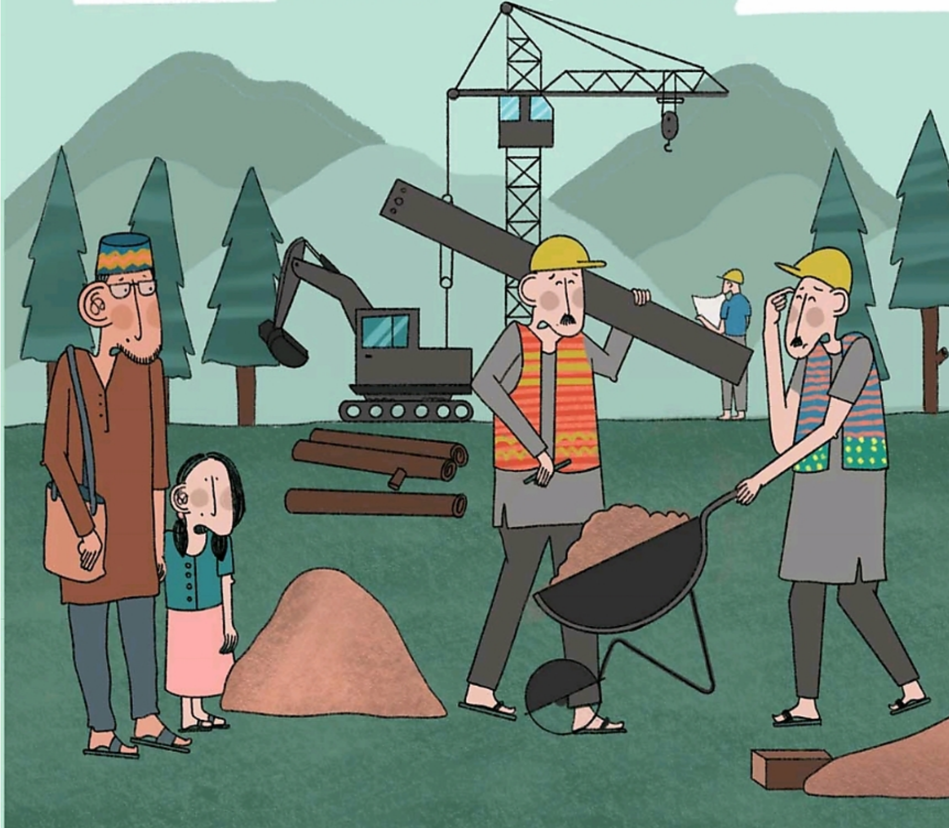

यहां की भाषा नहीं समझते थे.

ठेकेदार उन्हें अपनी बात ठीक से नहीं समझा पाता, इसलिए वह उन्हें बेवजह डांटता रहता था. वे जब दुकान पर सामान लेने जाते तो दुकानदार भी उन की भाषा नहीं समझ पाता और अकसर वह उन्हें सामान देने से मना कर देता. यह देख कर मजदूर परेशान हो जाते.

मास्टरजी को अकसर वे आतेजाते देखते रहते थे. उन के पहनावे और हावभाव से वे समझ गए थे कि वे स्कूल के मास्टर हैं. वे सम्मानपूर्वक हाथ जोड़ कर उन को नमस्ते करते थे.

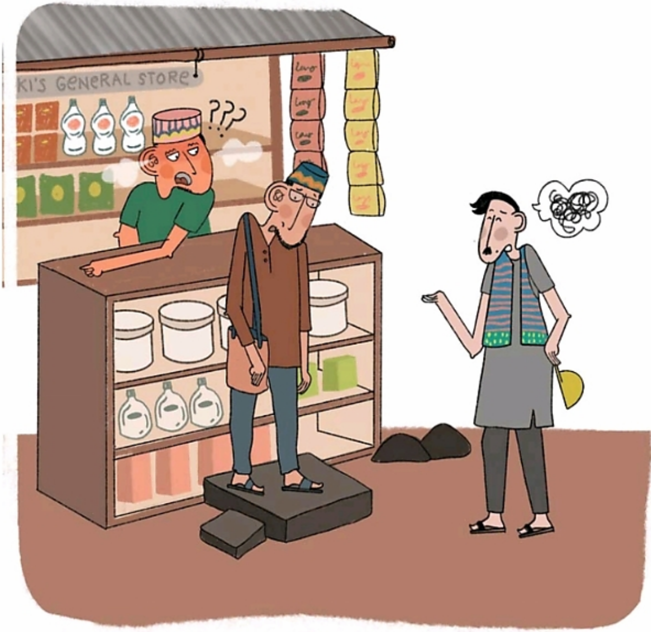

एक दिन मास्टरजी गांव की दुकान से सामान ले रहे थे, तभी एक मजदूर वहां आया और उस ने दुकानदार से सामान मांगा. भाषा न समझ पाने के कारण दुकानदार ने हमेशा की तरह उसे झिड़क कर सामान देने से मना कर दिया. यह देख कर मास्टरजी को बड़ा दुख हुआ. उन्होंने तभी सोच लिया कि वे इन मजदूरों को थोड़ाबहुत स्थानीय भाषा जरूर सिखाएंगे. इस से इन्हें यहां रहने में कोई तकलीफ नहीं होगी.

मास्टरजी ने किसी तरह अपनी बात उन तक पहुंचा दी. दिन में काम के दौरान उन्हें बिलकुल भी समय नहीं मिलता था. शाम को मास्टरजी उन्हें वहीं थोड़ाबहुत हिंदी भाषा सिखाने लगे. कई बार उन्हें इस के लिए बहुत देर तक मजदूरों का इंतजार करना पड़ता था.

आयशा को यह बात जरा भी अच्छी नहीं लगी. अकसर शाम को वह अपने पापा के साथ पार्क में घूमने जाती थी. टहलते हुए पापा उसे बहुत अच्छी कहानियां सुनाते थे. मजदूरों को पढ़ाने के कारण इन दिनों पापा उसे बिलकुल भी समय नहीं दे पा रहे थे.

मास्टरजी की मेहनत रंग लाई और एक महीने में मजदूर थोड़ीबहुत स्थानीय भाषा समझने लगे. मास्टरजी खुश थे कि आखिरकार उन की इतने दिनों की मेहनत सफल हो गई थी.

उन्हें खुश देख कर आयशा बोली, ‘‘पापा, आज आप बहुत खुश हैं.’’

‘‘हां बेटा, मेरी मेहनत सफल हो गई. अब सड़क पर काम करने वाले वे मजदूर थोड़ाबहुत स्थानीय भाषा समझने लगे हैं.’’

‘‘पापा, इन मजदूरों को सिखाने के कारण आप कब से मेरे साथ घूमने नहीं गए और न ही आप ने मुझे अच्छी कहानियां सुनाईं.’’

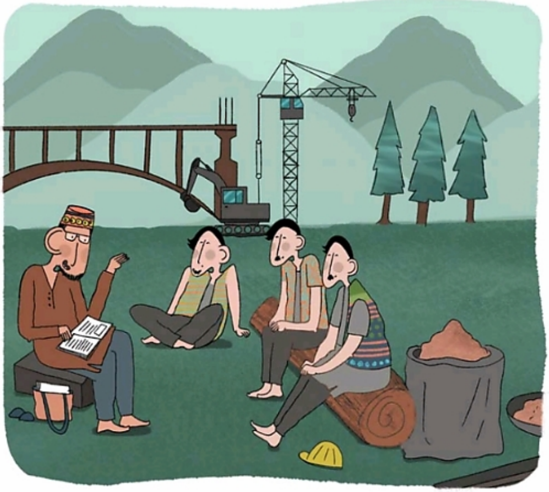

“तुम चिंता मत करो बेटा. तुम्हें भी मैं ढेर सारी कहानियां सुना दूंगा. मुझे लगता था उन अनपढ़ और दूसरे देश से आए मजदूरों को थोड़ाबहुत यहां की स्थानीय भाषा सिखाना भी मेरा कर्तव्य था.

“पापा, आप ने उन के पीछे बेकार इतनी मेहनत की. पढ़ने के लिए बच्चों को शिक्षक के पास जाना होता है. यहां सबकुछ उलटा चल रहा है. ऐसा कहीं होता है कि शिक्षक छात्रों को सिखाने के लिए उन के पीछे लगे रहें. आप ने एक महीने तक इन के लिए कितनी परेशानी उठाई है.”

आयशा की बात सुन कर पापा हंसने लगे और बोले, “बेटा, तुम अपने नजरिए से ठीक सोच रही हो. तुम्हारी बात सुन कर मुझे आज महात्मा गांधी का एक रोचक किस्सा याद आ गया.”

“कौन सा किस्सा पापा?” आयशा ने पूछा.

“अच्छा, मैं तुम्हें सुनाता हूं,” कह कर वे बड़ी तन्मयता से बापू को याद कर आयशा को कहानी सुनाने लगे.

महात्मा गांधी जब बैरिस्टर बन कर दक्षिण अफ्रीका गए थे तो वहां अपने देशवासियों की हालत देख कर उन्हें बहुत बुरा लगा. वहां काम करने वाले अधिकांश भारतीयों को अंगरेजी नहीं आती थी. जिस के कारण उन्हें वहां काम करने में बहुत परेशानी थी. गांधीजी मानते थे कि हर इंसान के लिए मातृभाषा का ज्ञान होना बहुत जरूरी है, लेकिन उस के साथसाथ यहां रहने के लिए अंगरेजी का ज्ञान भी आवश्यक है.

उन्होंने तय किया कि वे यहां रहने वाले भारतीयों को अंगरेजी सिखाएंगे, जिस से उन्हें अपने दैनिक कामकाज में आसानी होगी. उन्होंने यह बात सब तक पहुंचा दी कि वे अंगरेजी सीखने के इच्छुक भारतीयों को यह भाषा सिखाना चाहते हैं. वे लोगों का इंतजार करते रहे. बड़ी मुश्किल से हफ्ते भर बाद एक औफिस का बाबू उन के पास अंगरेजी सीखने आया. उस के कुछ

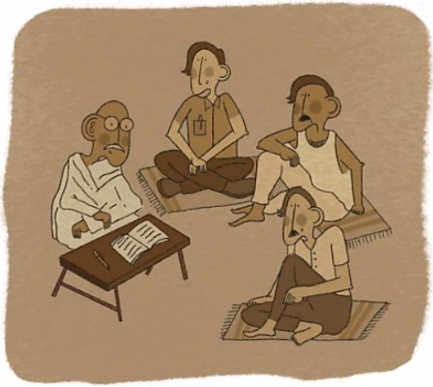

दिन बाद सैलून वाला नाई और आखिर में एक दुकानदार उन से अंगरेजी पढ़ने के लिए राजी हो गए. उन तीनों को अंगरेजी का केवल कामचलाऊ ज्ञान चाहिए था. जिस से उन्हें अपने कामकाज में आसानी हो जाए.

गांधीजी बड़े प्यार से उन की जरूरत के हिसाब से उन्हें अंगरेजी भाषा सिखा रहे थे. काम की अधिकता के कारण अकसर वे तीनों उन के पास नियमित पढ़ने नहीं आ पाते थे. कुछ दिन बाद स्थिति यह हो गई कि गांधीजी उन्हें पढ़ाने को तैयार बैठे रहते, लेकिन उन्हें पढ़ने की फुर्सत ही न मिलती. वे दिनभर अपने काम में व्यस्त रहते और पढ़ाई न कर पाते. मजबूर हो कर गांधीजी खुद उन के पास पढ़ाने के लिए पहुंच जाते.

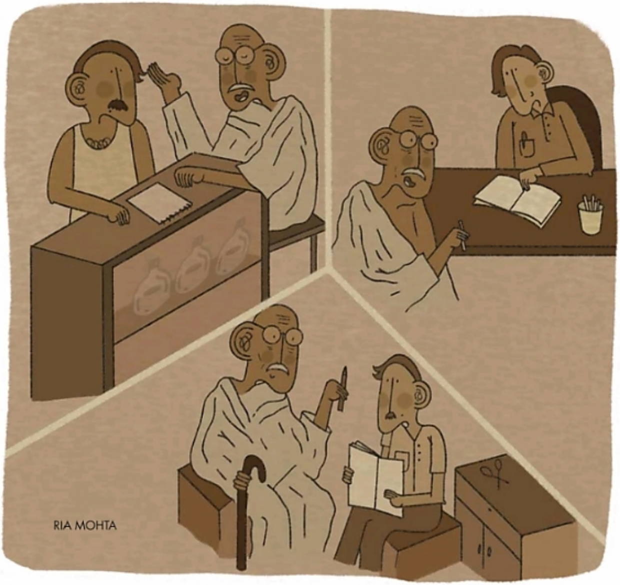

औफिस के बाबू को पढ़ाने के लिए कई बार उन्हें घंटों औफिस के बाहर बरामदे में इंतजार करना पड़ता था. सैलून में नाई के पास बाल कटवाने वाले ग्राहकों के लिए वे दुभाषिए का काम करते थे. वे ग्राहक की बात अपनी भाषा में नाई को समझाते. दुकानदार को उस के सामान के नाम अंगरेजी में बताते थे. अकसर वे जाते समय उस की दुकान का हिसाबकिताब भी कर देते थे.

काफी प्रयास के बाद गांधीजी अपने उन तीनों शिष्यों को कामचलाऊ अंगरेजी सिखाने में सफल हो गए. छात्रों से उन्हें फीस तो कुछ नहीं मिली, लेकिन उन्हें अंगरेजी सिखाने में बहुत मेहनत करनी पड़ी. अपने काम को अंजाम तक पहुंचा कर वे बहुत खुश थे. एक महान व्यक्ति बनने के लिए उन्होंने अपनी ओर से काम के मौके को अच्छे अवसर में ढालने का प्रयास किया, जिस से किसी का भला हो सके. तभी तो उन्हें आगे चल कर महान बापू और राष्ट्रपिता के रूप में जाना जाता है.

आयशा बड़े ध्यान से गांधीजी का यह रोचक किस्सा सुन रही थी. वह बोली, ''सच में बापू बहुत महान इंसान थे.''

''हां बेटा, मैं भी उन के बताए रास्ते पर चलने की कोशिश करता हूं और इसी तरह छोटेमोटे काम कर के अपना जीवन धन्य समझ लेता हूं.''

पापा की बातें सुन कर आयशा के मन में उन के प्रति सम्मान और बढ़ गया था. रास्ते में उन्हें वही नेपाली मजदूर मिले. उन्होंने मास्टरजी का स्थानीय भाषा में अभिवादन किया. यह देख कर आयशा को बहुत अच्छा लगा. उस ने भी सोच लिया था कि वह भी बड़े हो कर अपने पापा की तरह सब की मदद के लिए हमेशा तैयार रहेगी. ●

दादाजी और विश्व डाक दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

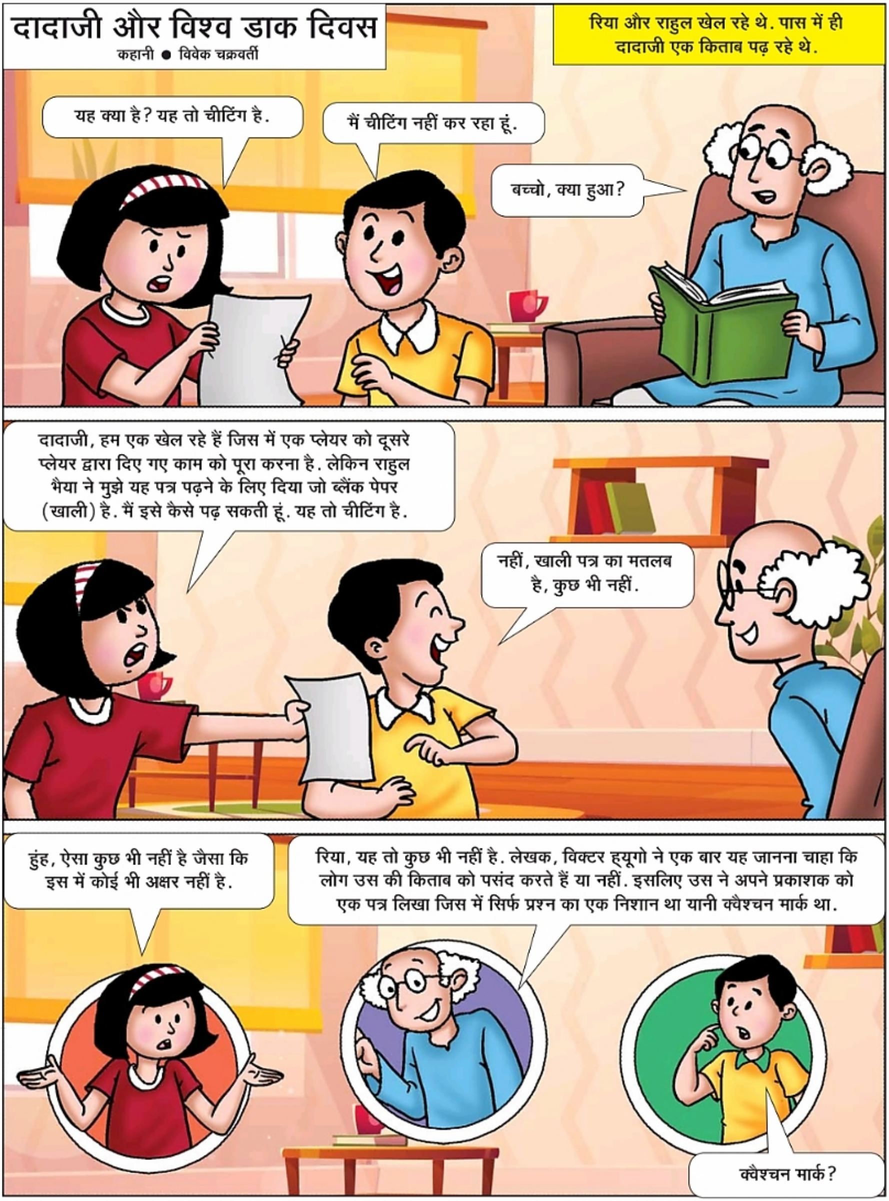
रिया और राहुल खेल रहे थे. पास में ही दादाजी एक किताब पढ़ रहे थे.
यह क्या है? यह तो चीटिंग है.
मैं चीटिंग नहीं कर रहा हूं.
बच्चो, क्या हुआ?
दादाजी, हम एक खेल रहे हैं जिस में एक प्लेयर को दूसरे प्लेयर द्वारा दिए गए काम को पूरा करना है. लेकिन राहुल भैया ने मुझे यह पत्र पढ़ने के लिए दिया जो ब्लैंक पेपर (खाली) है. मैं इसे कैसे पढ़ सकती हूं. यह तो चीटिंग है.
नहीं, खाली पत्र का मतलब है, कुछ भी नहीं.
हुंह, ऐसा कुछ भी नहीं है जैसा कि इस में कोई भी अक्षर नहीं है.
रिया, यह तो कुछ भी नहीं है. लेखक, विक्टर ह्यूगो ने एक बार यह जानना चाहा कि लोग उस की किताब को पसंद करते हैं या नहीं. इसलिए उस ने अपने प्रकाशक को एक पत्र लिखा जिस में सिर्फ प्रश्न का एक निशान था यानी क्वैश्चन मार्क था.
क्वैश्चन मार्क?

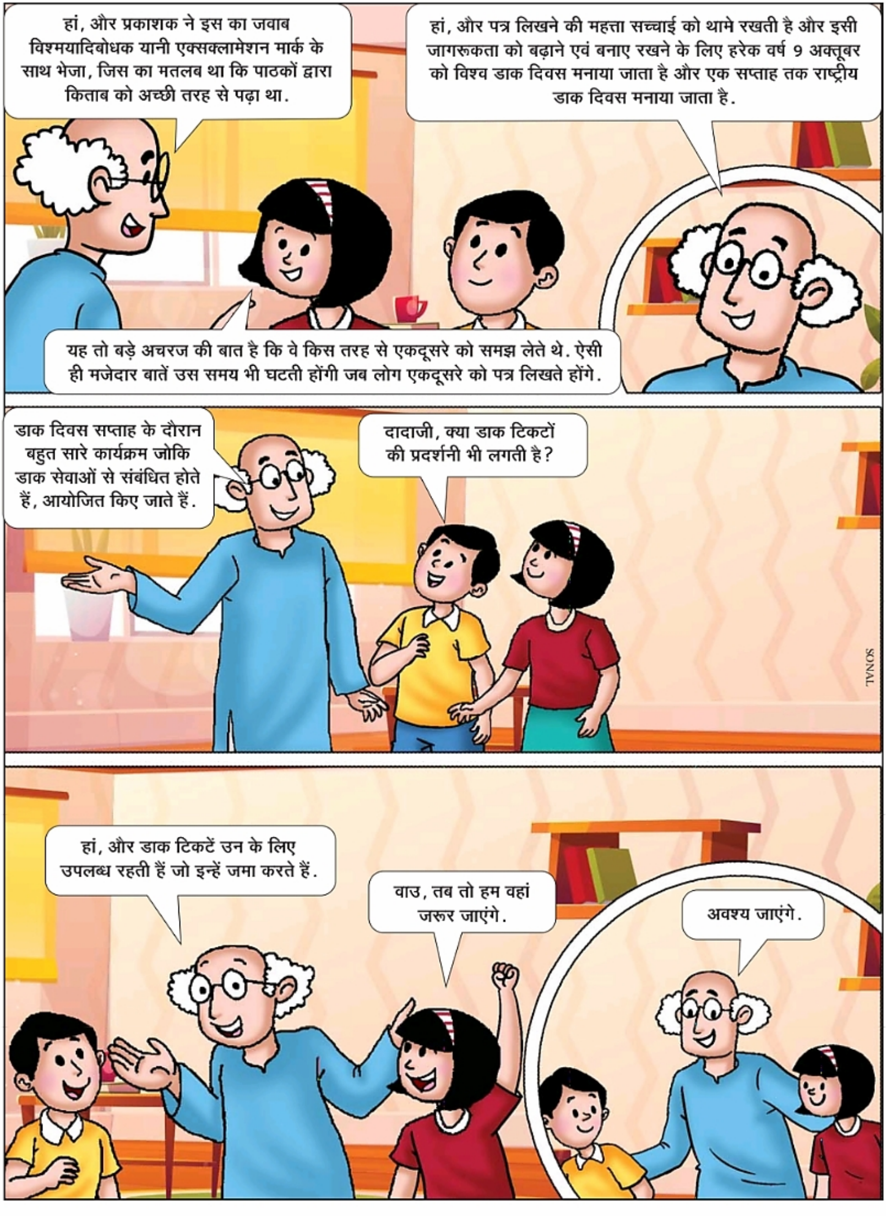
हां, और प्रकाशक ने इस का जवाब विश्मयादिबोधक यानी एक्सक्लामेशन मार्क के साथ भेजा, जिस का मतलब था कि पाठकों द्वारा किताब को अच्छी तरह से पढ़ा था.
हां, और पत्र लिखने की महत्ता सच्चाई को थामे रखती है और इसी जागरूकता को बढ़ाने एवं बनाए रखने के लिए हरेक वर्ष 9 अक्तूबर को विश्व डाक दिवस मनाया जाता है और एक सप्ताह तक राष्ट्रीय डाक दिवस मनाया जाता है.
यह तो बड़े अचरज की बात है कि वे किस तरह से एकदूसरे को समझ लेते थे. ऐसी ही मजेदार बातें उस समय भी घटती होंगी जब लोग एकदूसरे को पत्र लिखते होंगे.
डाक दिवस सप्ताह के दौरान बहुत सारे कार्यक्रम जोकि डाक सेवाओं से संबंधित होते हैं, आयोजित किए जाते हैं.
दादाजी, क्या डाक टिकटों की प्रदर्शनी भी लगती है?
SONAL
हां, और डाक टिकटें उन के लिए उपलब्ध रहती हैं जो इन्हें जमा करते हैं.
वाउ, तब तो हम वहां जरूर जाएंगे.
अवश्य जाएंगे.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

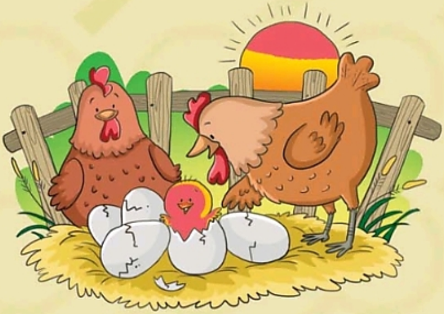

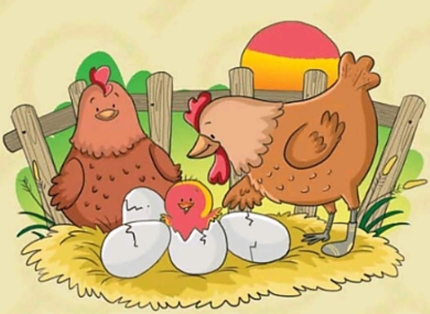

हमारा और उन का चलना

पैंगुइन एक कमाल का जानवर है और केवल वही एक जानवर है जो इंसानों की तरह सीधी रीढ़ के साथ चलता है. खास कर अफ्रीकन पैंगुइन बहुत हद तक इंसानों की तरह चलते हैं और जब आप उन्हें देखते हैं तो आप को लगेगा कि वे अनाड़ी हैं क्योंकि वे झूमते और घूमते हुए जान पड़ते हैं.

लेकिन शोधकर्ताओं के अनुसार पैंगुइन इंसानों की तुलना में ज्यादा अच्छे तरीके से यानी सही तरह से चलते हैं. जब वे चलते हैं तो उन के शरीर का ऊपरी हिस्सा एक पैंडुलम की तरह व्यवहार करता है, जिस का मतलब होता है कि वे प्रत्येक कदम के साथ थोड़ा घूमने के लिए सिर्फ थोड़ी सी ऊर्जा यानी ऐनर्जी का इस्तेमाल कर रहे हैं जबकि दूसरी ओर, हम चलते हैं तो हमें हर कदम के साथ हर बार अपने पूरे शरीर को थोड़ा सा उठाना पड़ता है. पैंगुइन का हिलनाडुलना, उस की ऊर्जा को हमारी तुलना में ज्यादा बचाती है, जितना कि हम बचा सकते हैं. हिलनेडुलने से उस की ऊर्जा संरक्षित हो पाती है और वह हम से वे कहीं ज्यादा सक्षम हो पाता है. यही कारण है कि लंबी अवधि के उपवास के बाद भी पैंगुइन में प्रवास और शिकार करने की ऊर्जा अभी भी बाकी बची रहती है क्योंकि उस का हिलतेडुलते हुए चलना सब से कारगर और कामयाब तरीका है.

एक पैंगुइन का औसतन गोता यानी डाइब 2.5 मिनट के लिए होता है और नियमित तौर पर लगभग 98 फीट गहराई में होता है.

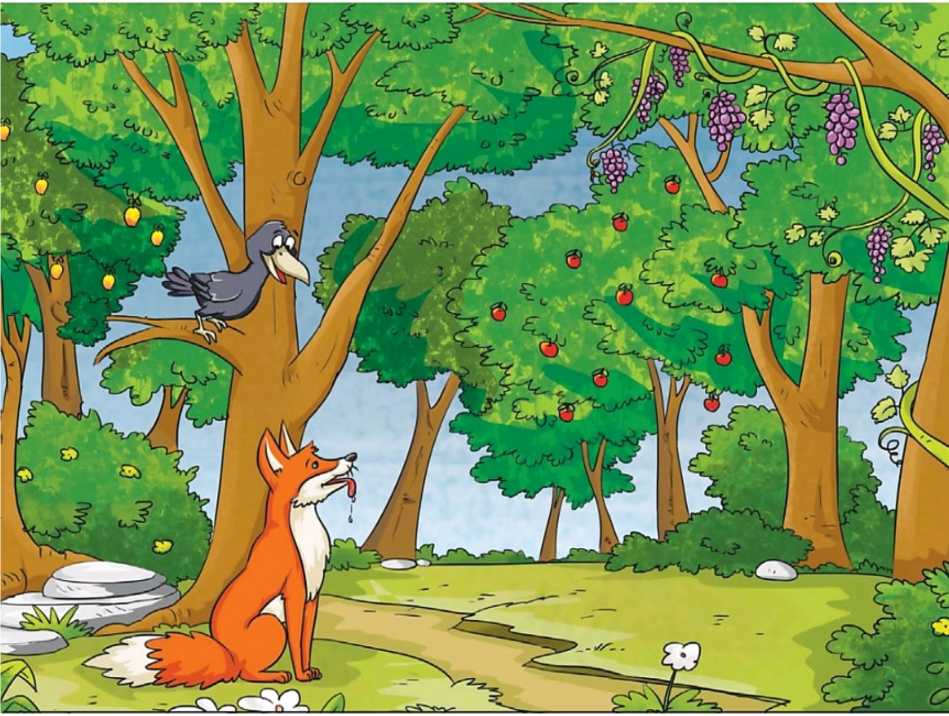

अंगूर मीठे हैं

कहानी ● डा. के. रानी

गरमी का मौसम था. फौक्सी लोमड़ी दोपहर में जंगल से गुजर रही थी. जंगल के एक छोर पर विंची भेड़ का बहुत बड़ा बगीचा था. उस बगीचे में तरहतरह के फलफूलों के कई पेड़पौधे लगे थे. इसी बगीचे में रास्ते की तरह एक बड़ी सी ताजे अंगूरों की बेल सड़क की ओर झुकी थी. फौक्सी रास्ते के किनारे नीम के पेड़ के नीचे बैठ कर अंगूरों से लदी बेल को देखने लगी. रसीले अंगूर देख कर उस के मुंह में पानी आ रहा था. उसी पेड़ की डाल पर ब्लैकी कौआ बैठा हुआ था.

फौक्सी को वहां बैठा देख कर वह बोला, ''क्या बात है फौक्सी, आज भरी दोपहरी में पेड़ के नीचे बैठ कर आराम कर रही हो?'' ब्लैकी ने ताना मारते हुए कहा.

''हां, मैं बस वहां से गुजर रही थी. लेकिन मौसम में काफी गरमी है. जिस के कारण मैं अब और नहीं चल सकती. इसलिए मैं ने सोचा कि मैं कुछ देर आराम कर लूं,'' फौक्सी ने कहा.

''फौक्सी, क्या तुम उन रसीली अंगूरों की बेल को देख रही हो क्या? मेरे खयाल से वह सब खट्टी है,'' ब्लैकी ने कहा.

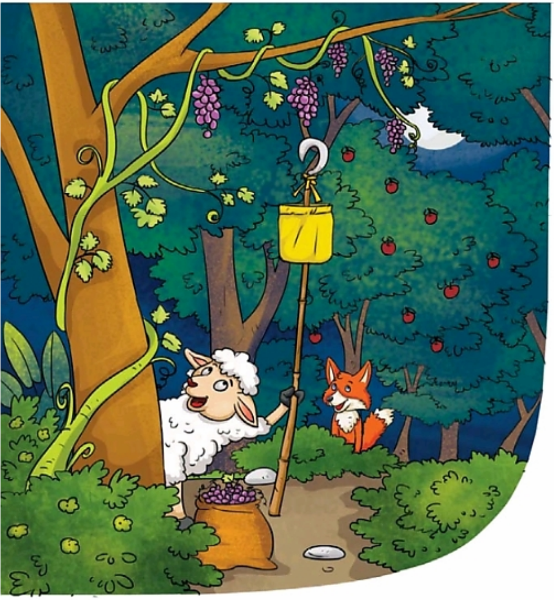

‘‘यह तो खाने के बाद ही पता चलेगा कि अंगूर खट्टे हैं या मीठे.’’

‘‘मैं ने एक किताब में पढ़ा था कि एक बार लोमड़ी को जब अंगूर खाने को नहीं मिले तो वह कहने लगी, अंगूर खट्टे हैं.’’

‘‘तुम सही कह रही हो, लेकिन यह तो सदियों पुरानी कहानी है.’’ अब लोमड़ी भी स्मार्ट हो गई है. मैं तो ऐसी कहानी पर यकीन नहीं करती.’’

‘‘तो फिर तुम सामने वाली बेल से अंगूर तोड़ कर अपनी चालाकी का परिचय दे दो.’’

‘‘अभी मेरा अंगूर खाने का मन नहीं है. जब मन होगा तब तुम्हें दिखाऊंगी कि मैं कितनी स्मार्ट हूं,’’ फौक्सी ने जवाब दिया.

उस की बात ब्लैकी को बुरी लगी और वह बुरा सा मुंह बना कर वहां से उड़ गया. फौक्सी ब्लैकी से चिढ़ गई. वह मन ही मन बुदबुदाई, ‘पेड़ पर बैठ कर बड़ीबड़ी बातें बना रहा है. ऐसा नहीं कि दोचार अंगूर तोड़ कर मुझे दे दे. गरमी के मारे गला मेरा सूख गया है.’’

थोड़ी देर सुस्ता कर फौक्सी घर की ओर चल दी. उस के दिमाग में यही बात घूम रही थी कि बेल से पके हुए अंगूर कैसे तोड़े जाएं? बेल के अंगूर उस की पहुंच से बाहर थे. वह उछल कर भी उन तक नहीं पहुंच सकती थी. वह तो अच्छा था कि उस ने लालच में पड़ कर जमीन पर गिरे झूठे अंगूर नहीं खाए वरना ब्लैकी यह बात सब तक पहुंचा देता और उस की बड़ी हंसाई होती.

फौक्सी की आंखों के सामने तब से वह अंगूर की बेल ही घूम रही थी. वह सोचने लगी, ‘‘यह बगीचा विंची का है. वह भी तो ऊपर चढ़ कर अंगूर नहीं तोड़ सकता. उस ने अंगूर तोड़ने के लिए कोई तो व्यवस्था कर रखी होगी. अगर उसे वह पता चल जाए तो वह थोड़े से अंगूर तोड़ कर आराम से खा सकती है.’’

वह तभी से अंगूर तोड़ने के तरीके के बारे में सोचने लगी. रात के समय वह चुपचाप फिर उस बगीचे में गई और पहुंच कर बड़े ध्यान से चारों तरफ देखने लगी.

उस का अनुमान सही था. विंची ने अंगूर के लिए एक लंबी सी बांस की डंडी रखी हुई थी. उस ने उस के सिरे पर एक मुड़ा हुआ चाकू और उस के ठीक नीचे एक थैला बांध रखा था. वह बहुत संभल कर चाकू से अंगूर का गुच्छा काटता तो वे थैली में गिर जाते.

विंची रोज सुबह जंगलवासियों के उठने से पहले ही पके अंगूर तोड़ कर रख लेता और फिर उन्हें बाजार

में बेच देता. उस ने बांस की डंडी को घर के पिछवाड़े छिपा कर रखा हुआ था, जिस से किसी की नजर उस पर न पड़े.

उस रात फौक्सी ने बहुत सतर्क हो कर बगीचे के आसपास की तलाशी ली. उस का अनुमान सही निकला. घर के पिछवाड़े विंची को वह बांस का डंडा मिल गया, जिस से वह अंगूर तोड़ता था.

फौक्सी ने बहुत संभल कर डंडा उठाया और उसे ले कर अंगूर की बेल के पास आ गई. उस ने सावधानी से अंगूर के गुच्छे काटे. उन्हें उस ने अपने झोले में रखा और डंडे को वापस उसी जगह रख कर बड़ी चालाकी से अपने लिए अंगूर का इंतजाम कर लिया था.

अगली सुबह फौक्सी अपने आंगन में बैठ कर मजे से अंगूर खा रही थी. तभी उधर से ब्लैकी कौआ गुजरा. फौक्सी ने उसे आवाज लगाई, ''कहां जा रहे ब्लैकी? इधर आओ, मैं तुम्हें मीठे अंगूर खिलाती हूं.''

अंगूर का नाम सुन कर ब्लैकी हैरान रह गया. वह तुरंत उस के नजदीक आ गया. सच में फौक्सी अंगूर खा रही थी.

''लो, कुछ अंगूर तुम भी खा लो,'' फौक्सी ने कहा.

''तुम्हें सुबहसवेरे अंगूर कहां मिल गए?''

''अंगूर मिलते नहीं हैं, उन को पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है. लो, चख कर देखो, बहुत मीठे हैं.''

''तुम ही खाओ अंगूर. मुझे जरूरत होगी तो मैं बेल से तोड़ कर दोचार अंगूर खा लूंगा. अंगूर की व्यवस्था करने में तुम्हें दिक्कत होती है मुझे नहीं.''

''मुझे लगता है, मेरी बात तुम्हारे दिल को लग गई थी.''

''हां, तुम्हारी बात ने मुझे सोचने को मजबूर कर दिया था कि बेकार की उछलकूद मचाने से अच्छा है कि दिमाग से काम लिया जाए और अपने लिए अंगूरों की व्यवस्था की जाए. बस, मैं ने वही किया

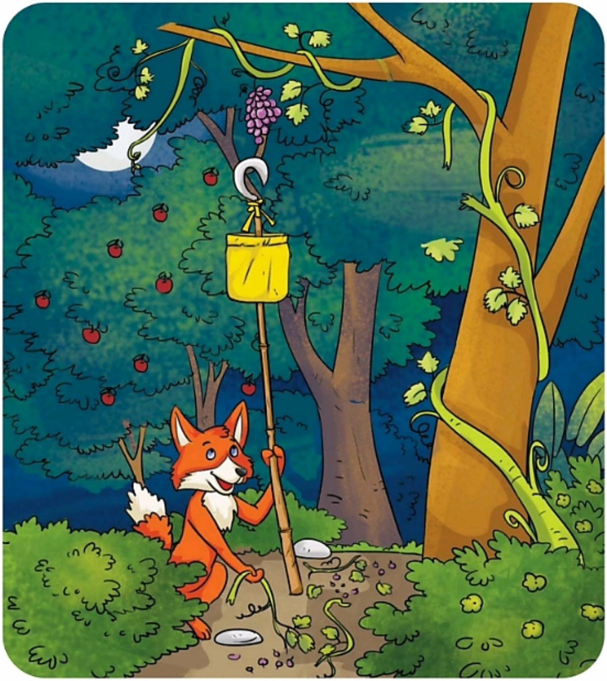

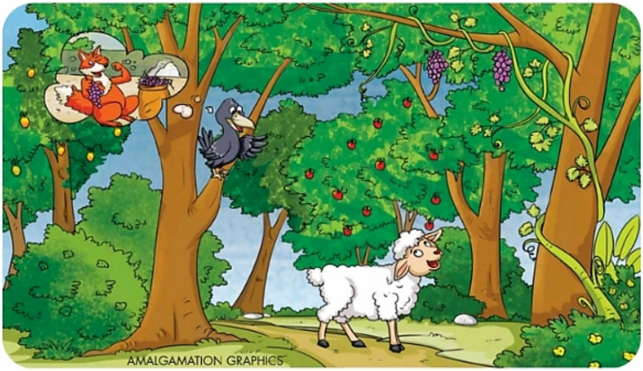
AMALGAMATION GRAPHICS

और मुझे मीठे अंगूर खाने को मिल गए. अब फिर अपनी कहानी मुझे मत सुनाना.''

''ठीक है, नहीं सुनाऊंगा,'' बोल कर ब्लैकी वहां से उड़ गया. वह धीरे से विंची के बगीचे के पास पहुंचा. विंची भेड़ उस समय बाहर खड़ा अंगूर की बेल को बड़े ध्यान से देख रहा था. उसे बेल पर गुच्छे कुछ कम नजर आ रहे थे.

ब्लैकी ने पूछा, ''क्या देख रहे हो?''

''लगता है, किसी ने मेरी बेल से अंगूर चुराए हैं.''

''मैं ने अभी फौक्सी लोमड़ी को अंगूर खाते हुए देखा. हो सकता है उसी ने चुराए हों.''

''तुम्हारा दिमाग तो सही है. इतनी ऊंची बेल पर फौक्सी नहीं पहुंच सकती.''

''मैं ने उसे अभी अंगूर खाते देखा तो तुम्हें बता दिया,'' ब्लैकी इतना कह कर वहां से उड़ गया. विंची को उस की बात पर जरा भी यकीन नहीं हुआ.

ब्लैकी के ताना मारने पर फौक्सी लोमड़ी ने दिमाग लगा कर विंची के बगीचे से अंगूर तोड़े और उसी के सामने मजे से खा लिए, लेकिन किसी को उस पर जरा भी शक नहीं हुआ. उस के बाद से फिर अभी ब्लैकी ने फौक्सी का मजाक नहीं उड़ाया. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : कबूतरों की मदद करें :

1. दिल्ली
2. मुबंई
3. पुणे
4. अहमदाबाद
5. जयपुर
6. हैदराबाद
7. लखनऊ
8. कोच्चि
9. भोपाल
10. पटना

पृष्ठ 33 : एल्मो की मदद करें : पंक्ति 3 (मार्ग 3).

पृष्ठ 21 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

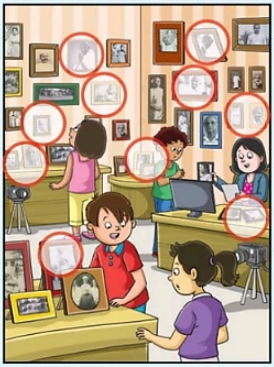

पृष्ठ 38 : पक्षी की मदद करें :

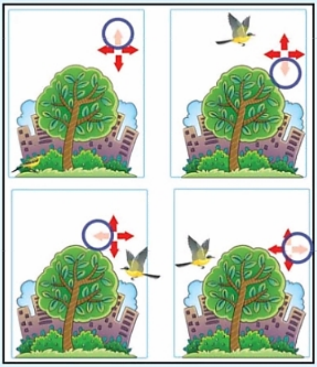

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर कहानियां
ગૃહશોભા ચંપક સરસ સલિલ गृहशोभिका चंपक सरस सलिल গৃহশোভা க்ருஹ ஷோபா சம்பக் சரஸ சாரல் గృహశోభ ಚಂಪಕ
ಗೃಹಶೋಭಾ ഗൃഹശോഭ ചംപക് સલિલ చంపక్ Highlights CHAMPS Highlights Genies MOTORING

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 02 to 08 Published on 26/09/2021. Pgs. 52

PARLE
MAKE THE GOODNESS OF MILK YOUR SUPERPOWER.
PARLE
Milk Shakti
Enriched with
7 Vitamins
2 Minerals
ENRICHED WITH
7 VITAMINS
2 MINERALS
BISCUITS